₹ २०

ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

आषाढ़ २०७६ जुलाई २०१९

चलें विद्यालय...

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

दिल्ली शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ

7 जून

शाम 6:30 बजे

आई.ए.एस. मेन्स टेस्ट सीरीज़-2019

सामान्य अध्ययन 15 जून से प्रारंभ

(हिन्दी एवं अंग्रेज़ी दोनों माध्यमों के लिये)

अंग्रेज़ी अनिवार्य प्रश्न-पत्र 6 जुलाई से प्रारंभ

निबंध (हिन्दी एवं अंग्रेज़ी दोनों माध्यमों के लिये) 7 जुलाई से प्रारंभ

वैकल्पिक विषय (केवल हिन्दी माध्यम के लिये)

21 जून से प्रारंभ

हिन्दी साहित्य • इतिहास • भूगोल

ऑफलाइन, ऑनलाइन एवं पोस्टल

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें 8448485517

हिन्दी साहित्य

वैकल्पिक विषय (वीडियो क्लासेज़)

द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

सामान्य बैच (अवधि 6 माह)

12 जून, प्रातः 11:30 बजे

एवं

24 जून, प्रातः 8:00 बजे

तीव्र बैच (अवधि 3 माह)

14 जून, दोपहर 4 एवं शाम 7 बजे

(प्रतिदिन दो कक्षाएँ)

इतिहास

वैकल्पिक विषय

द्वारा- श्री अखिल मूर्ति

12 जून, प्रातः 8:00 बजे

समाजशास्त्र

वैकल्पिक विषय

द्वारा- श्री प्रवीण पाण्डेय

14 जून, प्रातः 8:00 बजे

भूगोल

वैकल्पिक विषय

द्वारा- श्री कुमार गौरव

15 जून, प्रातः 8:00 बजे

प्रयागराज शाखा

सामान्य अध्ययन

डॉ. विकास दिव्यकीर्ति की ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ

23 जून, रविवार

शाम 6:00 बजे

हिन्दी साहित्य

वैकल्पिक विषय (वीडियो क्लासेज़)

द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

14 जुलाई

दोपहर 2:30 बजे

भूगोल

वैकल्पिक विषय

द्वारा - श्री वी.के. त्रिवेदी

15 जुलाई

दोपहर 2:30 बजे

इतिहास

वैकल्पिक विषय

द्वारा - श्री अख्तर मलिक

16 जुलाई

दोपहर 2:30 बजे

दिल्ली- 8448485519, 8448485520, 87501-87501 | प्रयागराज- 8448485518, 8929439702, 87501-87501

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आषाढ़ २०७६ ■ वर्ष ४०
जुलाई २०१९ ■ अंक १

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gamail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003592502
IFSC- SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

आज हम सब एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ पैसा ही सब कुछ होता जा रहा है। आपकी पीढ़ी पढ़-लिखकर एक मात्र कोई काम करना चाहती है तो वह है रुपया कमाना। कई बार लगता है क्या यह वही भारत देश है जहाँ हमारे पुरखे हमें सिखा गए- "जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।"

हम चाहे जितना इस देश और समाज से अर्जित कर लें परंतु वह तब तक सार्थक नहीं जब तक हम उसमें से समाज का वह भाग लौटा न दें जिस पर समाज का ही अधिकार है। आप कहेंगे देश और समाज के लिए दान तो वे करें जिसकी आय बहुत हो। जो स्वयं गरीब है, पाई-पाई कर पैसा जोड़ रहा वह कैसे दे सकता है?

ऊपर के चित्र में आप जिसे देख रहे हैं न ये हैं 'यशोदा माता'। मात्र २० वर्ष की आयु में विधवा हुईं तो कान्हा की नगरी वृन्दावन में आ गईं। स्वाभिमानी थीं इसलिए कभी भीख नहीं माँगी। हाँ बाके बिहारी जी के मंदिर के आगे बैठकर दर्शनार्थियों के चप्पल-जूतों की देखभाल करने लगीं। बदले में कोई ५ पैसे १० पैसे तो कोई चवन्नी-अठन्नी दे जाता। समय चक्र घूमता रहा भोजन के अतिरिक्त जो कुछ बचता जमा करती गईं। एक दिन समाज के प्रबुद्ध लोगों की मदद से उन्होंने अपनी बचत की राशि से एक गौशाला और एक धर्मशाला का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया। जानते हैं उनके द्वारा कितनी राशि दान की गई थी इन दोनों कार्यों के लिए? ४० लाख रुपये।

चौंकिए मत, भारत के मूल भाव को समझने का प्रयास कीजिए। क्या हम केवल पढ़कर, नौकरी करके लाखों के पैकेज कमाने के लिए जन्में हैं?

राष्ट्र और समाज देवता के ऋण को नहीं चुकाया तो हमारा जीवन व्यर्थ हो जावेगा। आइए, हम भी संकल्प लें तभी तो हम सब कन्हैया और ग्वाल-बाल थोड़ी सी प्रेरणा ले सकेंगे अपनी यशोदा मैया से।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- घमण्डी बादल - नरेन्द्र देवांगन ०५
- बतख के जूते - उज्ज्वला केलकर १४
- गुरु का निर्णय - राजकुमार द्विवेदी २२
- खट्टी मीठी गोली - डॉ. प्रभा पंत २८
- हरियाली पर्व - नवीन जैन ३९
- केवटिया की कुदान - सुधा भार्गव ४२

कविता

- किसने दी हमको... - अनंतप्रसाद रामभरोसे ०८
- मेरा बस्ता - डॉ. गोपाल राजगोपाल ११
- आओ देखो जल... - डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' १३
- पेड़ पर स्कूल - डॉ. फहीम अहमद १७
- नदिया - दिनेश विजयवर्गीय ३८
- एक रंग - डॉ. शोभा जैन ४१
- कौए का भोज - शुभदा पाण्डेय ४८
- चालाक बच्चा - उमाशंकर मनमौजी ४८

प्रसंग

- समझदार मछली - ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' ०९
- ईश्वर - रवीन्द्र क्षीरसागर ३४

आलेख

- ज्ञान की महान परम्परा - गोपाल माहेश्वरी १०

नाटिका

- ठठपाल -भगवती प्रसाद द्विवेदी १८

संस्मरण

- मेरे घर आए दो नन्हें... - मोनिका जैन 'पंछी' ३२

रचनाकारों से निवेदन

सभी बाल रचनाकारों एवं साहित्यकारों से निवेदन है कि यदि आप देवपुत्र में प्रकाशन हेतु अपनी रचना अणुडाक (E-mail) से भेजना चाहते हैं तो कृपया अपनी रचना- editordevputra@gmail.com पर भेजिए।
अब से devputraindore@gmail.com का उपयोग केवल सदस्यता एवं व्यवस्था कार्यों के लिए किया जाना अपेक्षित है।

चित्रकथा

- बोली - संकेत गोस्वामी १२
- पिताजी की परेशानी - देवांशु वत्स ३१
- डाक्टर का बिल - देवांशु वत्स ४७

बाल प्रस्तुति

- आदर्श आरंभ -नीतीष कुमार ४४

स्तंभ

- देश विशेष (१) - श्रीधर बर्वे २१
- गाथा वीर शिवा की (२९) - २४
- विषय एक कल्पना अनेक : - अरविन्द साहू २६
  - डॉ. रामनिवास मानव २६
  - डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी २७
- आपकी पाती - ३०
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ३५
- सचित्र विज्ञान चर्चा - संकेत गोस्वामी ३६
- संस्कृति प्रश्नमाला - ३८
- हमारे राज्यवृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ४०
- आओ पता करें - ४३
- पुस्तक परिचय - ४६
- छः अंगुल मुस्कान - ४९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!
देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है-
खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास**
बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर**
खाता क्रमांक - **53003592502**
IFSC- SBIN0030359
राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए।
नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है।
उदाहरण के लिए -
सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए -
"**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

घमंडी बादल

कहानी : नरेन्द्र देवांगन

समुद्र से वाष्प के रूप में कल्लू बादल ने ढेर सारा पानी भर लिया। वह जैसे ही आगे बढ़ने को हुआ, समुद्र ने उसे समझाया, ''गर्मी के बाद वर्षा ऋतु आने वाली है। धरतीवासियों का गर्मी से हाल बेहाल है। सब तुम्हारा रास्ता देख रहे हैं, उन्हें निराश मत करना। मन खोलकर बरसना, यही तुम्हारा काम है।''

समुद्र का इस तरह सीख देना कल्लू बादल को अच्छा नहीं लगा। गुस्से में बोला, ''मुझ शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं। मैं बरसूं चाहे न बरसूं मेरी इच्छा।'' फिर उड़ गया।

आकाश में काले बादल को इधर-उधर मंडराते देख लोगों की आँखें प्रसन्नता से चमक उठी। एक व्यक्ति चिल्लाया, ''वह देखो वर्षा करने वाला काला बादल आ गया। अब वर्षा होगी और हमें पानी मिलेगा।''

लेकिन घमंडी कल्लू बादल तो लोगों को तड़पाने की सोच रहा था। उसने बड़ी उपेक्षा से लोगों से कहा, ''तुम लोगों को पानी की आवश्यकता है तो मैं क्या करूँ। मैं किसी का सेवक नहीं। अपनी इच्छा से ही बरसूंगा चाहे कुछ भी हो जाए।'' फिर लोगों को तड़पता छोड़ आगे बढ़ गया। लोग हाथ मलते खड़े रह गए।

कल्लू बादल घमंड से भरा उड़ता चला जा रहा था। बहुत सारे खेतों के ऊपर पहुँचा। वहाँ पर किसान खेती की तैयारी में लगे थे। कल्लू बादल को देख एक किसान हर्ष से उछल पड़ा, पावस वाला बादल आ गया। यह अवश्य बरसेगा। अब हम हल चलाएंगे और बीज छिड़केंगे।''

''मैं क्यों बरसूं? तुम लोगो की खेती से मेरा क्या लेना-देना।'' कल्लू बादल ने बुरा सा मुँह बनाया और वहाँ से उड़ गया।

किसानों के खिले मुखड़े मुरझा गए। एक किसान ने कहा, यह वर्षा वाला बादल है, अवश्य बरसता। लेकिन हवा अधिक चल रही है। हवा ही इसे उड़ाकर आगे ले गई।''

उस किसान की बात सुनकर हवा को बहुत बुरा लगा। उसने कल्लू बादल को डांटा, ''गलती तुम कर रहे हो और किसान मुझे दोष दे रहे हैं। देखो कल्लू, सूखे खेतों को पानी देना, प्यासे लोगों की प्यास बुझाना ही तुम्हारा काम है।''

घमंडी कल्लू बादल कहाँ समझने वाला था। वह हवा से भी झगड़ने लगा, ''तुम अपना काम करो। मेरे काम में टांग अड़ाने की आवश्यकता नहीं। मुझे क्या करना है और क्या नहीं मैं अच्छी तरह जानता हूँ। तुम कौन होती हो मुझे सीख देने वाली।''

''कल्लू भाई, किसी का बुरा सोचना अच्छी बात

नहीं है। दूसरों के हित में काम आने में ही हमारी भलाई है। आवश्यकता पर लोगों को पानी मिल जाएगा तो तुम्हें आशीष मिलेंगे।'' कहकर हवा आगे बढ़ गई।

कल्लू बादल नहीं माना। उसे तो दूसरों को सताने में ही आनंद आता था। वह धीरे–धीरे आगे बढ़ने लगा। तभी उसने देखा एक कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाकर उसे सुखा रहा है। आनंद लेने के लिए उसने कुम्हार के बर्तनों के ऊपर थोड़ा सा पानी बरसा दिया। बेचारे कुम्हार की सारे परिश्रम पर पानी फिर गया। मिट्टी के बर्तन नष्ट हो गए।

कुम्हार को रोते–पीटते देख कल्लू बादल को बहुत आनंद आया। हवा कल्लू बादल की छेड़खानी देख रही थी। उसे बहुत दुःख हुआ। उसने कल्लू को फिर डाटा, ''जहाँ तुमको बरसना चाहिए, वहाँ बरसे नहीं। यहाँ बरसकर बेचारे कुम्हार के बर्तनों का सत्यानाश कर दिया।''

कल्लू खिलखिलाकर हँसा और बोला, ''देखो, ऐसा करके मुझे कितना आनंद आ रहा है। मैं ऐसे ही मस्ती से जीना चाहता हूं। किसी की हानि हो या लाभ मुझे क्या करना।''

हवा को कल्लू बादल की मनमानी पर बहुत क्रोध आ रहा था। पर कल्लू को समझाना बेकार था। वह सोच में पड़ गई कि क्या किया जाए जिससे घमंडी कल्लू बादल सही मार्ग पर आ जाए? अचानक उसे पहाड़ की याद आ गई। वह जल्दी से पहाड़ के पास पहुँची।

हवा को परेशान देखकर पहाड़ ने पूछा, '' क्या हुआ हवा बहन? तुम बहुत दुखियारी लग रही हो।''

''पहाड़ भैया, घमंडी कल्लू बादल की

मनमानी से मैं दुखी हूँ। वह लोगों को सताता फिर रहा है और लोगों की परेशानी देखकर आनंद ले रहा है।'' हवा ने बताया।

पहाड़ बोला, ''कल्लू बच्चा है बहन! उसे प्रेम से समझा दो सुधर जाएगा।''

हवा बोली, ''नहीं पहाड़ भैया! कल्लू बादल समणने वाला नहीं हैं, मैं समझा–समझाकर थक गई। पर वह मानता ही नहीं है।'' फिर हवा ने पहाड़ को कल्लू बादल की करतूतों के बारे में विस्तार से बताया।

''कल्लू तो बहुत अनुत्तरदायी काम कर रहा है। वर्षा

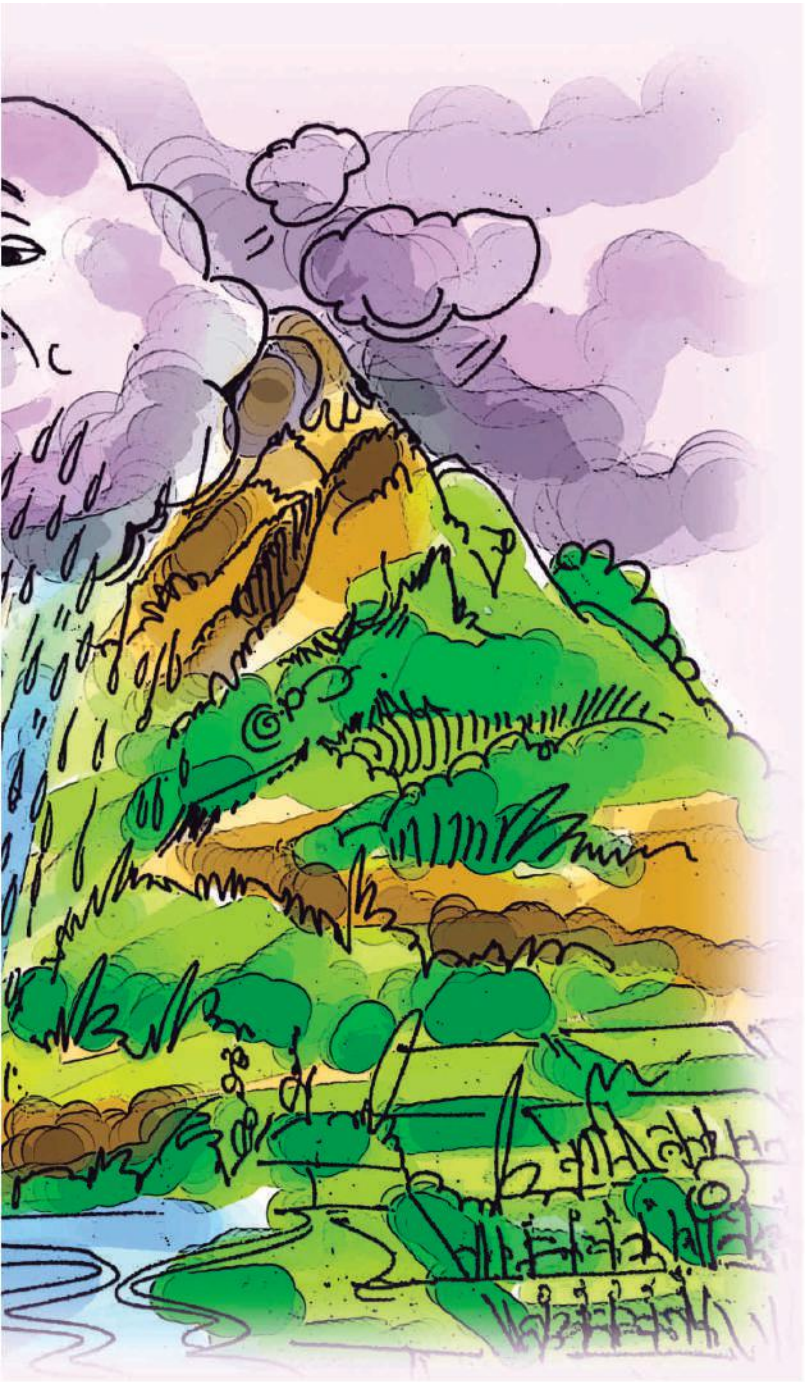

ऋतु में वह नहीं बरसेगा, तो लोगो की क्या स्थिति होगी।'' पहाड़ को भी चिंता हुई।

हवा ने कहा, ''पहाड़ भैया आप ही कुछ करो। इस कल्लू के बच्चे को पाठ पढाना आवश्यक है। इसे ठीक मार्ग में लाने का कार्य आप ही कर सकते हो।''

''ठीक है बहन। इस कल्लू बादल को मैं पाठ पढ़ाता हूँ। उसे ऐसा पाठ पढ़ाऊंगा कि उसका सारा अभिमान चूर-चूर हो जाएगा।'' कहकर पहाड़ ने अपनी योजना हवा को समझा दी।

हवा तुरंत कल्लू बादल के पास पहुंची। हवा को अपने पास आए देखकर कल्लू बादल को क्रोध आ गया। उसने फटकारते हुए कहा, ''अरी हवा की बच्ची! तुम मुझे फिर से समझाने आ गई क्या?''

''नहीं भाई, मैं तुम्हें यह बताने आई हूँ कि पहाड़ के पास मत जाना। उसे जोर का बुखार है और डाक्टर ने उसे भीगने से मना किया है।'' हवा ने कहा।

पहाड़ की योजना काम कर गई। कल्लू बादल किसी की बात को मानता ही नहीं था। वह दोगुने उत्साह से पहाड़ की तरफ बढ़ा। ताकि उसे पानी से नहलाकर सताए और आनंद लें।

जैसे ही कल्लू बादल पहाड़ से टकराया उसके भीतर भरा पानी तेज वर्षा के रूप में पहाड़ पर बरसने लगा। थोड़ी देर में कल्लू बादल का सारा पानी निकल गया और कल्लू रूई के टुकड़ों की तरह इधर-उधर बिखरने लगा।

''अरे, यह क्या हो रहा है। मैं धीरे-धीरे नष्ट हो रहा हूँ। मुझे कोई बचाओ। हवा बहन, पहाड़ भैया मेरी सहायता करो। मुझे नष्ट होने से बचा लो।'' अपने आपको नष्ट होता देख कल्लू बादल चीखने-चिल्लाने लगा।

''दूसरों को कष्ट पहुँचाकर खुश होने वालों का यही परिणाम होता है। तुम्हें करनी का फल तो भुगतना ही पड़ेगा।'' हवा ने कहा।

घमंडी कल्लू बादल पछताने लगा। उसे रह-रहकर समुद्र और हवा की सीख भरी बातें याद आ रही थी। पर अब क्या हो सकता था। उसका अस्तित्व खत्म हो गया। वह छोटे-छोटे सफेद टुकड़ों में बंटकर पूरी तरह समाप्त हो गया।

● **खरोरा (छ.ग.)**

किसने दी हमको सौगात

कविता : अनंत प्रसाद 'रामभरोसे'

छः ऋतुओं से भरी तिजोरी
किसने दी हमको सौगात?
गर्मी से राहत देने को
आती वर्षा ऋतु प्यारी
और शरद हेमन्त शिशिर
ऋतुएँ आती बारी-बारी,
है बसंत ऋतुओं का राजा
उसकी तो पूछो मत बात।
तरह-तरह के फूल और फल
तरह-तरह के अन्न यहाँ
तीज और त्योहार भला
इतने मिलते हैं और कहाँ,
सालों साल जहाँ सज-धज कर
आती खुशियों की बारात।
उच्च शृंखलाएं पर्वत की
पहरा देती निशिवासर।
जलनिधि है इतराता रहता
गंगा-जमुना को पाकर,
दुनिया देख दंग रह जाती
इस धरती की अहा बिसात।
भारत भूमि हमारी प्यारी
जिसकी छटा निराली है।
जन-जन इसका सेवक-रक्षक
जन-जन इसका माली है,
दिन में यहाँ बरसता सोना
अमृत ढरकाती है रात।

● सागर पाली (म.प्र.)

* निशिवासर = दिन-रात

समझदार मछली

प्रसंग : ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

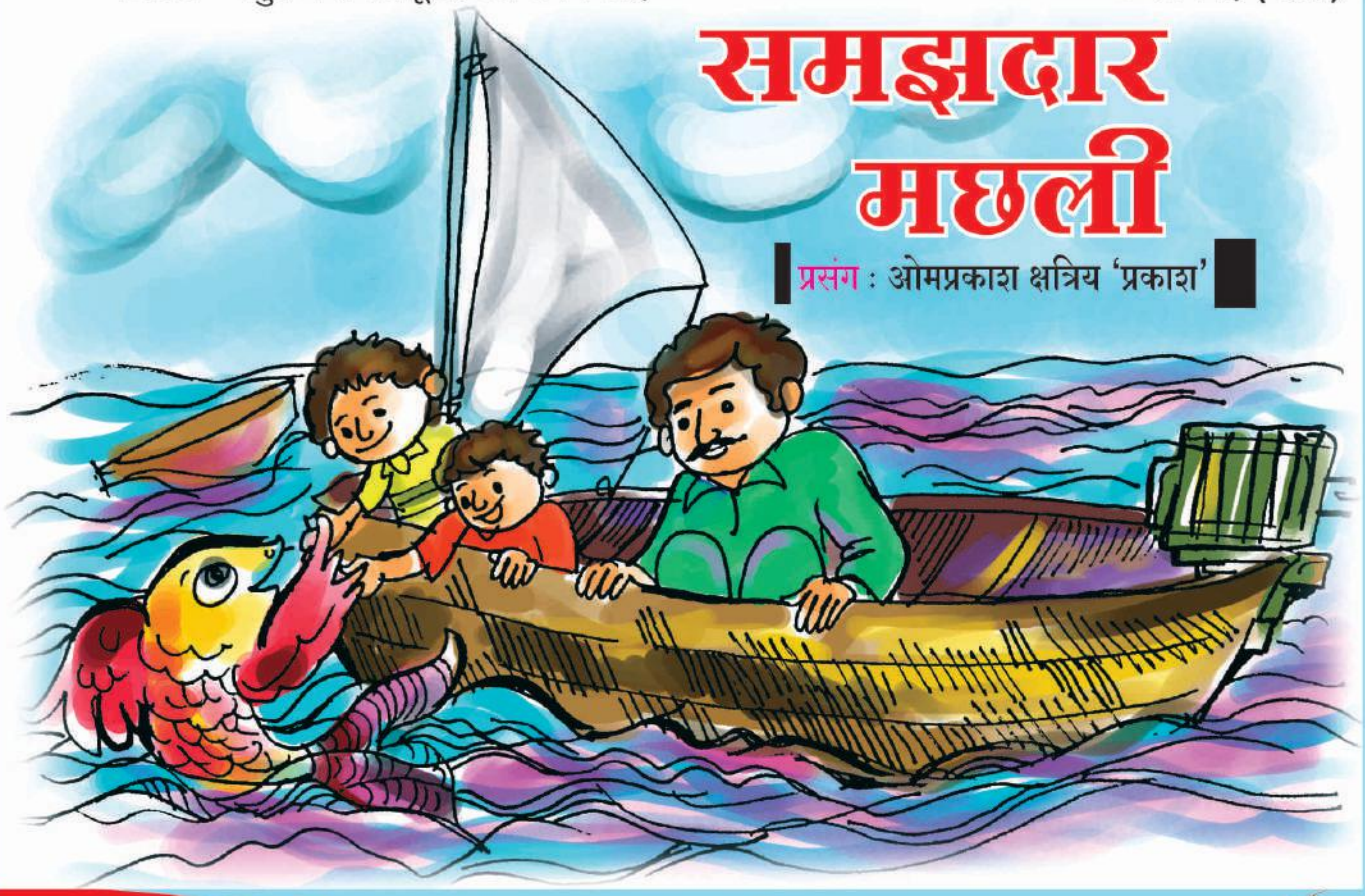

देवांश और राहुल सागर तट पर गए।

''आज हम नाव की सैर करेंगे।'' राहुल बोला।

तभी उसने एक मछली को रेत पर देखा। वह सागर की रेत पर पड़ी हुई तड़फ रही थी।

''चल! इसे सागर में धकेले देते हैं, ''कहते हुए देवांश और राहुल ने उस मछली को पानी में धकेल दिया।

वह मछली पानी में जाकर प्रसन्नता से उछल पड़ी। फिर तेजी से तैर कर चली गई।

इधर देवांश और राहुल नाव लेकर सागर में सैर करने चले गए। तभी उसके पिताजी दूसरी नाव लेकर उसके पास आए।

वे घबराए हुए थे। पास आते ही बोले, ''अरे बेटा! इस नाव में छेद था। इसे ठीक करना था। जल्दी से इस नाव में आ जाओ। यदि तुम उस में रहे तो डूब जाओगे,'' वे हड़बड़ाए हुए थे।

''मगर नाव में छेद कहाँ है? देवांश ने पूछा तो उसके पिताजी ने कहा, ''वह देखो। नाव में बीच में बड़ा सा छेद है।''

''कहाँ है?'' राहुल ने दोबारा पूछा। उसे नाव में कोई छेद दिखाई नहीं दे रहा था।

''अरे! नाव के नीचे तो कोई मछली तैर रही है,'' पिताजी ने नाव के छेद को ध्यान से देख कहा, ''देखो! वह नाव को अपनी पीठ पर उठा कर पानी में तैर रही है।''

यह सुनते ही देवांश और राहुल घबरा गए। तुरंत दोनों राहुल के पिताजी वाली नाव पर आ गए।

मछली तेजी से नाव के नीचे से निकली। तैर कर उछलकूद करती हुई दूर चली गई। वह जाते समय पीछे मुड़ कर देख रही थी। उसके मुँह पर वही घाव था जो तट पर पड़ी मछली के मुँह पर था।

जिसे देख कर राहुल चिल्लाया, ''अरे! यह तो सागर तट पर पड़ी वहीं मछली है।'' कहकर देवांश ने पिताजी को सारी कहानी सुना दी।

''उस मछली ने तुम्हारे प्राण उसी तरह बचाए जैसे तुमने उस मछली के बचाए थे।''

''हाँ पिताजी। मछलियां भी समझदार होती हैं, ''कहते हुए राहुल और देवांश ने मछली को हाथ हिलाकर अभिवादन किया और वापस अपने घर की ओर चल दिए।

• रतनगढ़ (म.प्र.)

।। गुरु पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा ।।

ज्ञान की महान परम्परा के प्रतीक हैं वेदव्यास

आलेख : गोपाल माहेश्वरी

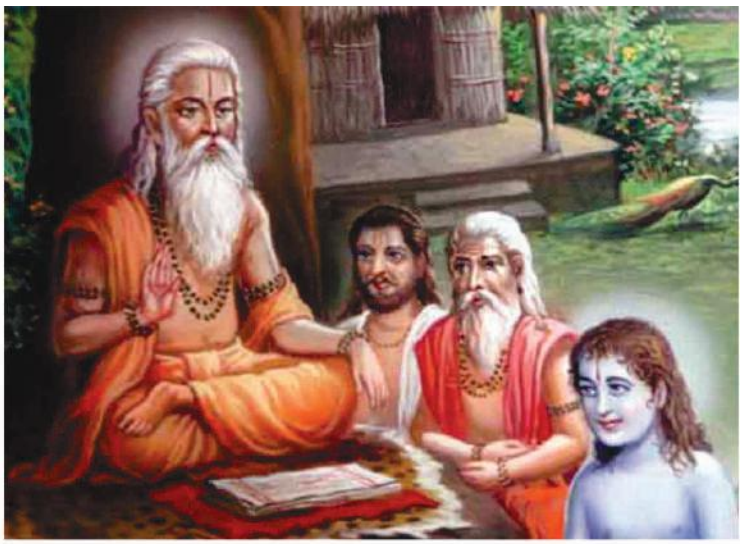

भारतीय इतिहास में अनेक ऋषियों–मुनियों–तपस्वियों की महान परम्परा में महर्षि वेदव्यास का नाम प्रथम क्रम पर है। तपोधन महर्षि पराशर और धीवर कन्या सत्यवती की संतान के रूप में एक द्वीप पर जन्मे वेदव्यास का मूल नाम 'कृष्ण' था जो संभवतः उनकी श्यामवर्णी काया अथवा अद्‌भुत ज्ञानाकर्षण शक्ति के कारण हुआ। द्वीप पर जन्म लेने के कारण पूरा नाम हुआ 'कृष्ण द्वैपायन' पराशर के पुत्र थे अतः 'पाराशर' कहलाए। लेकिन 'व्यास' नाम उनकी ज्ञान प्रसार की अद्‌भुत प्रतिभा के कारण हुआ। वेदों का संकलन, संपादन और विभाजन करके उनके नाम के आगे वेद विशेषण ही जुड़ गया और वे 'वेदव्यास' कहलाए। सुप्रसिद्ध अठारहपुराणों और उपपुराणों की रचना व्यास अथवा उनकी शिष्य परम्परा द्वारा होने से व्यास एक परम्परा का नाम हो गया। आज भी कथावाचकों को 'कथा व्यास' और उनके आसन को 'व्यासपीठ' कहा जाता है। महाभारत जैसे महाकाव्य की और उसी के अन्तर्गत श्रीमद्‌भगवतगीता की भी रचना करने वाले व्यास स्वयं उस महासमर के एक सक्रिय पात्र भी थे। इस महायुद्ध के अंत में अश्वत्थामा द्वारा अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भस्थ शिशु पर ब्रह्मास्त्र प्रयोग की निंदा और अर्जुन द्वारा उसे रुकवाने का कार्य व्यास देव ने ही किया था। इससे सिद्ध होता है कि वे केवल कलम घिसने वाले, भाषण करने वाले बुद्धिजीवी न थे वरन अपने देश, धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति अत्यंत सचेष्ट महापुरुष थे।

व्यास परम्परा ज्ञान के विस्तार की जाति बंधन मुक्त परम्परा है जो भारत की सनातन संस्कृति और इतिहास को प्रमाणिक और रोचक स्वरूप में व्यक्त करती है इसी से वे आद्य संपादक भी कहे जाते हैं। कई लोग पुराण साहित्य को काल्पनिक मानते हैं उनकी अपनी मान्यता हो सकती पर युद्ध, इतिहास,भूगोल, खगोल, विज्ञान, ज्ञान अध्यात्म, भक्ति, वास्तु, पर्यावरण, राजवंश, सामाजिक आदि कौन–से ऐसे विषय हैं जो इस साहित्य में सम्मिलित नहीं हैं। यह वेदव्यास जी के व्यापक और दूरदर्शी चिंतन का ही परिणाम है। यही कारण है कि व्यासोच्छिष्टं जगतसर्वम् अर्थात संसार के समस्त विषय किसी न किसी रूप में व्यास जी के द्वारा कहे जा चुके हैं, ऐसी मान्यता है। कहा तो यहाँ तक भी जाता है कि 'यन्न भारते तन्न भारते।' जो महाभारत (इस ग्रंथ का पुराना नाम भारत ही था) में नहीं है वह भारतवर्ष में भी नहीं है। विष्णु के २४ अवतारों में एक माने जाने से वे भगवान कहलाए। भगवान वेदव्यास की ही कृपा से हम श्रीकृष्ण द्वारा कहीं गई भगवद्‌गीता को पढ़ पा रहे हैं। यह श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दी गई कर्मप्रेरणा का वेदव्यास द्वारा किया गया काव्यमय अनुवाद ही है जिसे हम १८ अध्यायों में विभक्त ७०० श्लोकों वाली गीता के रूप में जानते हैं। महामुनि शुकदेव व्यास के ही महान आत्मज्ञानी पुत्र थे।

महान ज्ञान राशि भगवान श्रीवेदव्यास जी की जयंती आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरुपूर्णिमा के रूप में सारे विश्व में गुरुओं के प्रति श्रद्धापर्व के रूप में मनाई जाती है यही कारण है कि गुरुपूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं।

● इन्दौर (म.प्र.)

बनाओ तो जानें

● राजेश गुजर

बच्चो, मछली के इस चित्र को बनाने के लिए नीचे दिए इन ९ टुकड़ों को ऐसे जमाओ की यह पूरा चित्र बन जाए।

मेरा बस्ता

कविता : डॉ. गोपाल राजगोपाल

● महेश्वर (म.प्र.)

कितना भारी मेरा बस्ता
मैं इसको कंधे पर ढोता
करे सवारी मेरा बस्ता

भारी भरकम इसका बोझ
लदा पीठ पर करता मौज
कर देता है हालत खस्ता
कितना भारी मेरा बस्ता

शाला घर से दूर बहुत है
पाँव थके चूर बहुत हैं
काटे से न कटता रस्ता
कितना भारी मेरा बस्ता

काम नहीं है ये मामूली
बच्चा बन जाता है कुली
ज्ञान नहीं है इतना सस्ता
कितना भारी मेरा बस्ता

● उदयपुर (राज.)

बोली

चित्रकथा-

उल्लू को उड़कर जाते देख चिड़िया ने पूछा -
कहां चल दिये भाई?
मैं किसी और देश में बसने जा रहा हूं.
लेकिन क्यों?
मेरी बोली यहां किसी को पसंद नहीं, सब मुझसे नफरत करते हैं.
..इसलिए मैं अब किसी और देश में जाकर रहूंगा.
भाई, अगर तुम अपनी बोली बदल लो तो सब ठीक हो जायेगा..
लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया तो दूसरे देश में भी सब तुम्हें इसी तरह नापसंद करेंगे.

आओ देखो जल गुल्लक

कविता : डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

अब्बक-डब्बक, अबक-डबक,
आओ देखो जल गुल्लक,
छत के ऊपर जल गुल्लक।
सुनो, सुनो गुल्लक का हाल,
कुछ बच्चों ने किया कमाल।
पानी व्यर्थ न हो बर्बाद,
नया तरीका किया इज़ाद।
टंकी एक रखी छत पर,
जो बारिश में जाती भर।
उससे पाइप नीचे आया,
नीचे मीटर एक लगाया।
टंकी में कितना है पानी,
मीटर रखता है निगरानी
पानी भरते ही मीटर में,
धुन आती है छपक-छपक।
अब्बक-डब्बक, अबक-डबक,
आओ देखो जल गुल्लक।
जल गुल्लक हाँ, जल गुल्लक,
छत के ऊपर जल गुल्लक।
अब पानी का नहीं अकाल,
पानी मिलता है तत्काल
पानी का अच्छा उपयोग,
करते घर के सारे लोग।
धुल जाती है अपनी कार,
पौधों पर होती बौछार।
सिंच जाती है फुलवारी,
हरी भरी रहती क्यारी।
जल संचय की चर्चा है,
तनिक न इसमें खर्चा है।
बच्चों का झबरू भी अब तो
खूब नहाजा मटक-मटक।
अब्बक-डब्बक, अबक-डबक,
बड़े काम की जल गुल्लक
जल गुल्लक हाँ जल गुल्लक,
छत के ऊपर जल गुल्लक।
चलो बनाएं जल गुल्लक,
अब्बक-डब्बक, अबक-डबक,
जय गुल्लक जल गुल्लक।

● शाहजहांपुर (उ.प्र.)

बतख के जूते

कहानी : उज्जवला केलकर

एक झील थी। नीली नीली झील। झील का पानी नीलमणी जैसा चमचमाता था। झील के चारों ओर सरसों के खेत थे। सरसों के हरे भरे पौधों पर पीले–पीले फूले खिले थे। हवा के झोंकों के साथ हिलोर लेते थे। झूमते थे।

झील में मछलियाँ, कछुए और भाँति भाँति के जलचर थे। उस में सोने की तरह चमचमाती एक छोटी–सी मछली थी। उस का नाम सोनी था।

प्रातः का समय था। सूरज की सुनहरी किरणें झील पर बिखरी थीं। सारा वातावरण उल्लास भरा था। सोनी तैरते तैरते झील के किनारे तक आ पहुँची। उस ने चारों ओर देखा। सभी ओर सरसों से लदे पौधे उसे दिखाई दिये।

'कितना सुन्दर दृश्य है।' वह मन ही मन बोली। इतने में उसे किनारे के पास के जल में शैवाल दिखाई दिया। ''वाह. कितना स्वादिष्ट नाश्ता...बढ़िया...बहुत बढ़िया।'' कहते–कहते वह शैवाल के पास पहुँची और शैवाल खाने लगी।

उसने थोड़ी सी शैवाल खा ही ली। शैवाल खाते खाते उस का दम घुटने लगा।

वह सोचने लगी, 'अरी, यह क्या हो रहा है?' जब उसने जाना कि वह पानी में नहीं है, एक बतख के चोंच में है, तो वह घबरा गई।

जब सोनी शैवाल खा रही थी, तब एक बतख ने उसे देख लिया था।

'कितना स्वादिष्ट भोजन भगवान ने मेरे लिए भेजा है' सोच कर वह झट से सोनी के पास आया और सोनी को अपनी चोंच में उठाया।

सोनी ने धीरज बांध कर बतख से कहा, ''बतख भैया! छोड़ो ना मुझे। मैंने ये झील अभी तक ठीक तरह से देखी भी नहीं हैं।''

बतख बोला, ''अगर मैं तुझे छोड़ दूँ, तो मैं क्या खाऊँ? मुझे भी तो बहुत भूख लगी है।''

सोनी ने कहा, ''झील में भाँति भाँति का कितना भोजन उपलब्ध है। कितनी ढंग की अलग–अलग वनस्पतियाँ है। शैवाल है।''

''अगर मैं पानी में जाऊँगा, तो मुझे बहुत कुछ खाने को मिलेगा, किन्तु पानी में जाने से मेरे पाँव गीले हो जाएंगे। मुझे सर्दी, जुखाम हो जाएगा। बुखार आएगा। नहीं....नहीं....मैं पानी में नहीं जाऊँगा।''

सोनी गिड़गिड़ाने लगी। उसे छोड़ने की प्रार्थना करने लगी। फिर बतख ने कहा, ''अच्छा, मैं तुझे छोड़ देता हूँ, किन्तु मेरी एक शर्त है।''

''शर्त? कैसी शर्त?'' सोनी ने पूछा।

''तू मुझे तैरने वाले जूते ला कर दे। तैरनेवाले जूते पहनकर मैं झील में दूर–दूर तक जाऊँगा, और मेरा भोजन तलाश करूँगा। देख री...अगर शाम तक तू ने जूते नहीं लाए, तो मैं तुझे खा जाऊँगा।''

सोनी ने हामी भरी।

सोनी ने दो पहर तक पानी में तैरने वाले जूते खोजे, किन्तु उसे कहीं नहीं मिले। थककर वह किनारे के पास गई और रोने लगी। पानी में होने के कारण उस के आँसू किसी को दिखाई नहीं दिए, किन्तु उस की आवाज किनारे के पास से चलने वाली घोंघे ने सुन ली।

घोंघे ने पूछा, ''सोनारानी! क्या हो गया? तुम क्यो रोती हो?''

सोना बोली, ''बतख को चाहिए तैरने वाले जूते। नहीं तो वह मुझे खा जाएगा। मैंने सारी झील छान मारी, किन्तु मुझे जूते नहीं मिले। अब वो मुझे खा जाएगा।''

घोंघा बोला, ''सोना तू रो मत। मैं खेत में तैरने वाले जूते खोजूंगा। जूते अवश्य मिलेंगे।''

घोंघा जूते खोजने चल पड़ा। उस ने पूरे खेत में ढूंढा, किन्तु उसे तैरने वाले जूते कहीं नहीं मिले। अब घोंघा भी एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा।

उस पेड़ के डाली पर एक तितली बैठी थी। हवा के साथ हिलौरे ले रही थी। उस ने घोंघे की रोने की आवाज सुन ली। वह पूछने लगी, ''अरे कौन रो रहा है?'' फिर उसने घोंघे को देखा। ''घोंघे भाई! घोंघे भाई! क्या हो गया? क्यों रोते हो तुम?''

घोंघा बोला, ''बतख को चाहिए तैरने वाले जूते। सोना ने पानी में ढूंढा, मैंने खेत में ढूंढा। मगर जूते नहीं मिले। अब वह सोना को खा जाएगा। इसलिए मैं रो रहा हूँ।''

तितली बोली, ''घोंघा भाई...! घोंघा भाई....! तुम रोओ मत, मैं पेड़-पौधों पर उड़ूंगी तैरेन वाले जूते ढूंढूंगी। तैरने वाले जूते अवश्य मिलेंगे।''

तितली यहाँ उड़ी, वहाँ उड़ी। पूरे बगीचे की चक्कर उस ने काट लिया। फिर भी उसे तैरने वाले जूते कहीं नहीं मिले। थक कर निराश होकर तितली सरसों के एक पौधे पर बैठ गई और रोने लगी। उस के आँसू सरसों के फूलों पर टपकने लगे। फूल अचरज में पड़ गए। ''क्या हो गया आज तितली को? क्यों रो रही है बेचारी ?''

फूलों ने पूछा, ''तितली दीदी...तितली दीदी तू तो सदा हँसती है, नाचती है, झूमती है, चटपटी बातें करती हो। आज क्या हो गया तुम्हें? क्यों रोती हो तुम?''

तितली बोली, ''बतख को चाहिए तैरने वाले जूते। सोना ने पानी में ढूंढा, घोंघे ने खेत में ढूंढा। मैंने बगीचे में ढूंढा मगर जूते नहीं मिले। अब बतख सोना को खा जाएगा। इसलिए घोंघा भाई रोते हैं। घोंघा भाई रोते हैं इसलिए मैं रो रहीं हूँ।

सरसो के फूलों ने कहा, बस इतनी सी बात।

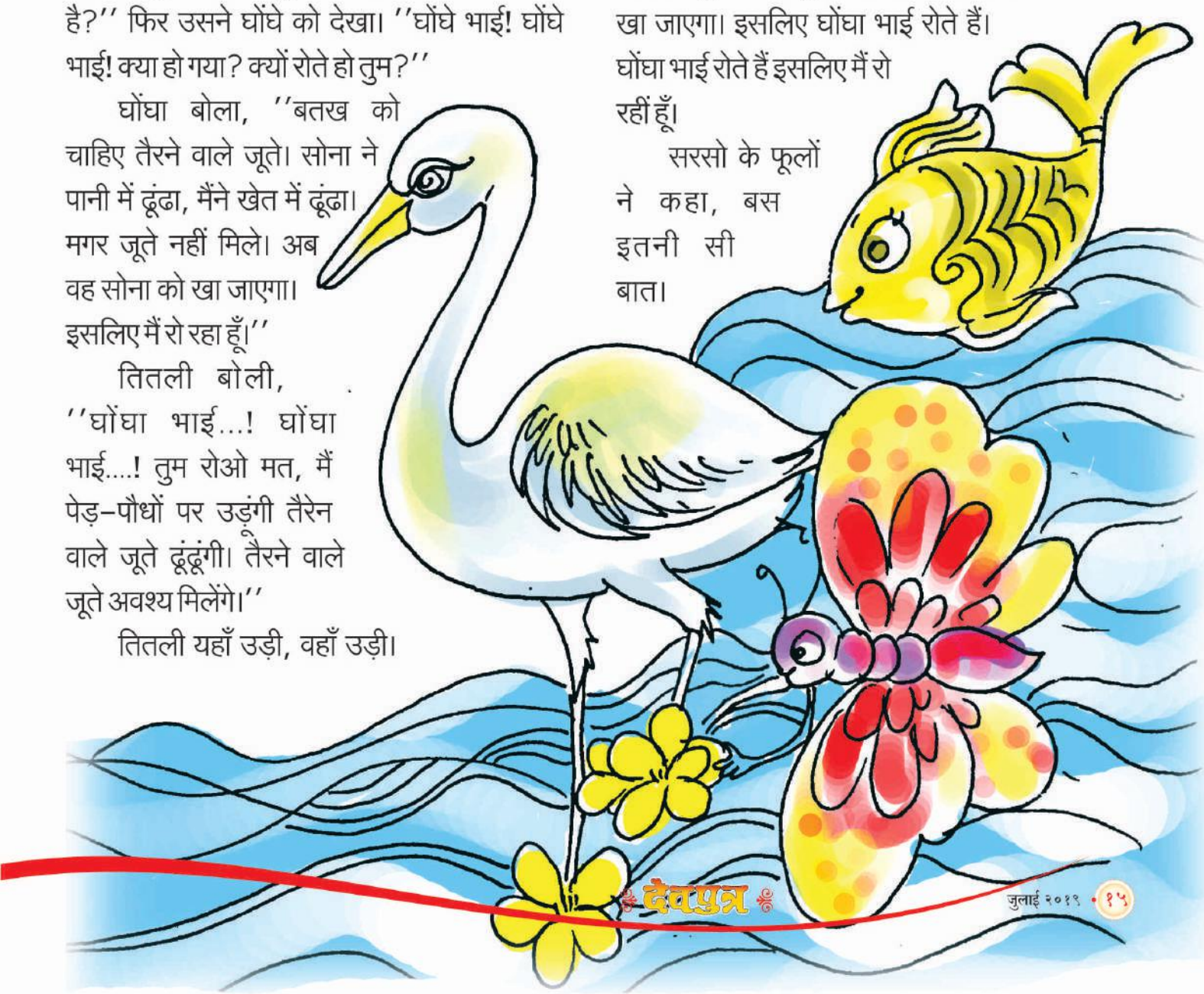

तू एक काम कर। हमारे बहुत से फूल इकट्ठा कर। उस के धागे निकाल। उस के धागों से जूते बून ले और बतख को पहना दें।''

''क्या ये जूते तैरेंगे?'' तितली ने आचरज से पूछा।

बिलकुल तैरेंगे। हम में बहुत तेल होता है, इसलिए हम से बुने हुए जूते पानी पर सरलता से तैर सकते हैं।''

अब तितली हँसने लगी। गाने लगी। हँसते गाते सरसों के फूल इकट्ठा करने लगी। फिर घोंघे ने फूलों से धागे निकाले। दोनों ने मिलकर धागों से जूते बुने।

शाम ढलने में अब थोड़ा ही समय बाकी था। सूरज की किरणें झील पर चमचमा रही थी किन्तु सोनी का मन न यह दृश्य देखने में लग रहा था, न शैवाल खाने में। उसे तो सिर्फ जूतों की पड़ी थी। अब तो उस ने जीवित रहने की आशा ही छोड़ दी थी।

''बतख भैया...बतख भैया...! मुझे तैरने वाले जूते अभी तक नहीं मिले। अब तुम मुझे खा लो।''

सोना यह कह ही रही थी, कि घोंघा और तितली जूते ले कर वहाँ आ पहुँचे।

''ये लो तैरने वाले जूते।'' कहते कहते घोंघा और तितली ने बतख को जूते पहनाए।

बतख के पैरों पर ये पीले पीले जूते कितने जँच रहे हैं न!'' तितली ने पूछा।

घोंघा ने 'हाँ' कहने के लिए अपना सिर हिलाया। जूते पहना हुआ बतख झील में खुशी खुशी दूर चला गया और सोना, घोंघा, तितली तीनों खुशी खुशी हँसने लगे।

● सांगली (महा.)

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

मोहन, राजू के पिता जी के पुत्र की माताजी के पोते की माता जी का पति लगता है, तो मोहन और राजू आपस में क्या होंगे?

(उत्तर इसी अंक में)

पेड़ पर स्कूल

कविता : डॉ. फहीम अहमद

महुआ की सुंदर डालों पे
लगा हुआ स्कूल।
टें टें की आवाज लगाते
आए तोते सर।
बोले पढ़ो समझ के सारे
फिर देना उत्तर।
पढ़ें गिलहरी, कोयल, मैना
डाली-डाली झूल।
लगें किताबों के पन्नों-से
पत्ते सारे प्यारे।
चीं चीं चूँ चूँ पढ़ते सारे
पक्षी लगते न्यारे।
नहीं डाँटते हैं तोते सर
हो जाए गर भूल।
खूब मगन होकर कॉपी में
लिखे गिलहरी सुंदर।
करते हैं तारीफ देख सब
मोती जैसे अक्षर।
खुश होकर तोते सर उसको
दें गुलाब का फूल।

● लखनऊ (उ.प्र.)

ठठपाल

नाटिका : भगवतीप्रसाद द्विवेदी

पात्र

ठठपाल - एक होनहार लड़का।
ठठपाल के दो
ग्रामीण
धनपति - एक मजदूर
लक्ष्मी - एक बेसहारा महिला

(सभी बच्चे गोल घेरे में खड़े हैं। बीच में ठठपाल खड़ा है। बच्चे उसे चिढ़ा रहे हैं।)

ठठपाल के मित्र (समवेत स्वर में) :

कंगालों में है कंगाल
नाम पड़ा इसका ठठपाल
माँ–बाप हो गये निहाल
कैसा नाम रखा ठठपाल।

ठठपाल (गुस्सा कर) : बंद करो भाई! हँसी–मजाक की भी हद होती है।

एक मित्र (मुँह बिचकाकर) : मगर प्यारे मित्र! भला यह भी कोई नाम है। ठठपाल। धत् तेरे की।

दूसरा मित्रः सचमुच भाई। क्या तुम्हारे माँ–बाप को कोई अच्छा–सा नाम नहीं सूझा, जो यह नाम रख दिया– ठठपाल!

तीसरा मित्र : लेकिन ठठपाल का मतलब होता क्या है?

चौथा मित्र : धन दौलत से कंगाल.....देह से खाली.....दिमाग से खाली।

पाँचवा मित्र : मगर हमारा साथी ठठपाल तो दिमाग से खाली नहीं है। तभी तो कक्षा में प्रथम आता है।

पहला मित्र : सब कुछ तो ठीक है, भाई! लेकिन यह अपना नाम क्यों नहीं बदल लेता? अच्छे नाम की कमी है क्या?

दूसरा मित्र : हाँ भैया! सभी लोग इसके नाम को लेकर चिढ़ाते रहते हैं। माँ–बाप की बदनामी होती है सो अलग।

तीसरा मित्र : इसीलिए तो हम लोग चाहते हैं कि यह अपना नाम बदल ले।

चौथा मित्रः हाँ–हाँ! न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

पांचवा मित्र : तो क्यों न हम इसे कोई नया नाम सुझाएँ।

ठठपाल : कोई आवश्यकता नहीं। अच्छे बुरे की पहचान करने में मैं स्वयं सक्षम हूँ। कृपया, मुझे अकेला

छोड़ दो।

सभी मित्र (एक साथ): ठीक है, हमे क्या!

(ताली बजाकर सभी गाते हैं।)

कंगालों में है कंगाल
नाम पड़ा इसका ठठपाल
माँ–बाप हो गये निहाल
कैसा नाम रखा ठठपाल।

(एक–एक कर सभी मित्र चले जाते हैं। ठठपाल अकेला रह जाता है।)

ठठपाल (बड़बड़ाते हुए) : मेरे मित्रों का कहना ठीक ही है। सभी मेरा भला चाहते हैं। वे चाहते हैं कि मेरा भी एक अच्छा सा नाम हो। मगर मैं अपना क्या नाम रखूँ?

(देर तक सोचता रहता है। फिर अंतिम निर्णय सुनाता है।)

अभी मैं निकलता हूँ – एक अच्छे नाम की खोज में। चल मेरे मन! ढूँढते हैं कोई अच्छा सा नाम!

(सोचते हुए ठठपाल आगे और आगे बढ़ता चला जाता है। तभी दूसरी ओर से कुछ लोग एक अरथी के साथ चलते हुए नजर आते हैं।)

ग्रामीण : राम नाम सत्य है...राम नाम सत्य है...राम नाम...

ठठपाल (एक ग्रामीण से) : काका, यह किसकी शवयात्रा है?

ग्रमीण : बेटा! बेचारा बड़ा दयालु व्यक्ति। प्रभु इसकी आत्मा को शांति दे।

एक महात्मा : हाँ बेटे! यह व्यक्ति हमेशा ही सच्चाई और ईमानदारी की राह पर चलता रहा। यह अवश्य स्वर्ग जाएगा।

ठठपाल: मगर इन्हें हुआ क्या था?

ग्रामीण : क्या बताएँ बेटा! साँप ने डँस लिया था। झाड़–फूँक में समय बर्बाद हुआ। परिणाम यह हुआ की अस्पताल जाने के पहले ही चल बसा।

ठठपाल : बाबा इनका नाम क्या था?

महात्मा : अमर!

ठठपाल : अमर? मगर ये तो मर गए। फिर यह अमर नाम...?

ग्रामीण : यही तो संसार है बेटे!

ठठपाल : विचित्र संसार है दादा! मरने वाले का नाम अमर... धत् तेरे की! भला यह भी कोई नाम हुआ।

(अरथी आगे बढ़ गई। ठठपाल ठिठककर खड़ा रहा। तभी अचानक उसकी नजर एक मैले–कुचैले आदमी पर पड़ती है। वह उधर ही बढ़ जाता है।)

ठठपाल: दादाजी ! आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

बूढ़ा (कुढ़ते हुए) : दिखाई नहीं देता है क्या! अंधे हो?

ठठपाल : नहीं दादाजी! मैं देख रहा हूँ कि यह धान का पुआल है। इससे धान निकाला जा चुका है। फिर आप इस धुने हुए पुआल को डंडे से पीटकर दुबारा क्यों धुन रहे हैं?

बूढ़ा : बाबू! हो सकता है, थोड़े दाने निकल आएँ

जिससे पेट की क्षुधा जुड़ाई जा सके।

ठठपाल : सुबह से आपने अभी तक कुछ खाया भी है या नहीं?

बूढ़ा : बस थोड़ा सा गुड़ मुँह में डालकर पानी पी लिया है।

ठठपाल : दादा! आपका नाम क्या है?

बूढ़ा : मेरा नाम? माँ–बाप ने बहुत उम्मीद से नाम रखा था धनपति।

ठठपाल (मायूस होकर) : दादा! आपका नाम धनपति यानी धन–सम्पत्ति के स्वामी... और आपका यह हाल?

बूढ़ा : इसी का तो रोना है, बाबू! सब भाग्य का खेल है।

(ठठपाल सोचते हुए आगे बढ़ता है। तभी सामने एक महिला आकर खड़ी हो जाती है।)

महिला (हाथ फैलाते हुए) कुछ दे दो बाबू! भगवान भला करेगा।

ठठपाल : अरी काकी! आप इस हाल में? आपकी साड़ी पूरी तरह से फट चुकी है। हड्डियों का ढाँचा ही तो बचा है। हे भगवान!

(ठठपाल ने अपनी जेब टटोलकर सारे पैसे महिला की हथेली पर रख दिये।) रख लो काकी!

महिला : जुग जुग जियो, बेटा!

ठठपाल : माँ! तुम्हारा नाम क्या है?

महिला : लक्ष्मी!

ठठपाल : लक्ष्मी! हे भगवान! कैसा विरोधाभास?

महिला : नाम से क्या रखा है बेटा! सब कर्मों का फेर है।

ठठपाल : आप ठीक कहती हैं काकी! नाम में क्या रखा है।

(ठठपाल वापस लौट रहा है। आगे बढ़ने पर सभी मित्र घेरकर खड़े हो जाते हैं।)

सभी मित्र : क्यों ठठपाल! नाम की तलाश पूरी हुई?

ठठपाल (ठठाकर हँसते हुए): हाँ मित्रों! भला नाम से क्या होने वाला है! क्या रखा है नाम में। माँ बाप ने जो भी नाम रख दिया, वही अच्छा है। अच्छा नाम नहीं, अच्छा काम आवश्यक है मित्रों!

अमर को मैंने मरते देखा
धनपति धुने पुआल
लक्ष्मी के तन वस्त्र नहीं था
भला नाम ठठपाल।

(सभी मित्र हँसते हुए तालियाँ बजाते हैं।
(पर्दा गिरता है।)

● **पटना (बिहार)**

चित्र विचित्र

• राजेश गुजर

बच्चों, मिकी माउस का यह चित्र हिन्दी के कौन-कौन से अंकों से बना है, ध्यान से देखकर बताओ।

मिलते जुलते नामों के देश (१)

आलेख : श्रीधर बर्वे

(दादाजी अपने कमरे में बेठे हैं, इतने में दो किशोरियों का प्रवेश)

अनंता– दादाजी क्या हमें कुछ समय देंगे, कुछ जानकारी लेना है।

दादाजी – बैठो–बैठो, जो पूछना है, पूछो तुम्हारे लिए समय की कोई कमी नहीं है।

अनंता– दादाजी, आज हम एटलस का अध्ययन कर रहे हैं और अभी अफ्रीका महाद्वीप का नक्शा हम देख रहे हैं, राजनीतिक नक्शे में एक ही देश के नाम दो–दो बार, तीन–तीन बार लिखे हैं। हमें समझ नहीं आ रहा है कि एक ही देश के नाम को एक से अधिक बार लिखने में क्या औचित्य है?

दादाजी– बच्चों ये एक ही देश के नाम बार–बार नहीं लिखे हैं– 'गिनी' नाम तीन बार और 'कांगो' दो बार लिखा है।

दादाजी – हाँ **गिनी** नाम तो तीन देश हैं जो पश्चिमी अफ्रीका के अटलांटिक महासागर तट पर स्थित हैं। ये तीनों देश पिछली शताब्दी के मध्य तक तीन अलग–अलग योरोपीय देशों के उपनिवेश थे। इनमें सबसे पहले स्वतंत्र हुआ फ्रांस का उपनिवेश गिनी जिसकी राजधानी **कोनाक्री** है और पूरा नाम है **रिपब्लिक ऑफ गिनी**। यह देश २ अक्टूबर, १९५८ को फ्रांस के कब्जे से मुक्त हुआ।

अनंता– और यह दूसरा गिनी देश कब मुक्त हुआ?

दादाजी– आजाद होने वाला दूसरा गिनी देश है– **इक्वेटोरियल गिनी**– इक्वेटर अर्थात भूमध्य रेखा। इस रेखा के निकट स्थित होने से इस देश ने यह नाम अपनाया। यह देश पहले स्पेन का उपनिवेश था। मलाबो इस देश की राजधानी है और पूरा वैधानिक नाम है **रिपब्लिक ऑफ इक्वेटोरियल गिनी**। यह देश खनिज तेल तथा बहुमूल्य इमारती लकड़ी के वृक्षों से समृद्ध है।

दीक्षा– और तीसरा गिनी देश भी तो है।

दादाजी– हाँ, तीसरा **गिनी** देश भी है, जिसकी राजधानी बिसाऊ नगर है। यह देश पहले पुर्तगालियों के अधीन हुआ करता था। इस देश ने अपनी आजादी अपने नेता अमिलकार केबराल के नेतृत्व में १९७५ में संघर्ष कर प्राप्त की। बिसाऊ नगर में इसकी राजधानी है।

अनंता– तीनो देशों के एक ही नाम होने के क्या कारण हैं?

दादाजी– ये तीनों देश अफ्रीका के गिनी तट पर स्थित हैं। इसलिए यह नाम इन्होंने अपना रखा है और जानते हो गिनी तट को गोरे लोगों की कब्रगाह भी कहा जाता है, क्योकि इस तट पर आकर व्यापार और विशेषकर अफ्रीकी अश्वेत लोगों को गुलाम बनाकर दास व्यापार शुरु किया था तो यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ उनको अनुकूल नहीं हुई। गोरे लोग बड़ी संख्या में मरने लगे तो गिनी तट को यह नाम दिया गया।

और हाँ हमें GUIANA शब्द से मिलते–जुलते और देशों के सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया के उत्तर में संसार का दूसरे नम्बर का बड़ा द्वीप है– 'न्यूगिनी'। इस द्वीप का पश्चिमी भाग 'इरियन जया' नाम से इण्डोनेसिया में एक राज्य है जबकि इसी द्वीप का पूर्वी भाग 'पपुआ न्यूगिनी' नाम से स्वतंत्र देश है, पोर्ट मोर्सबी इसकी राजधानी है।

दक्षिण अमेरिका के उत्तरी तट पर कुछ वर्षों पूर्व GUIANA नाम के तीन राज्य थे, पहला ब्रिटिश GUIANA 1966 में स्वतंत्र हुआ और उसने नाम की स्पेलिंग बदलकर GUIANA (गयाना) कर ली। दूसरा राज्य GUIANA 1975 में स्वतंत्र हुआ और सूरीनाम धारण कर लिया। तीसरा GUIANA अभी भी GUIANA नाम का उपनिवेश है।

● इन्दौर (म.प्र.)

गुरु का निर्णय

कहानी : राजकुमार द्विवेदी

एक गुरु थे। जंगल में उनका आश्रम था। वहाँ दूर-दूर के बच्चे पढ़ते थे। गुरुदेव बच्चों को उत्तम शिक्षा-संस्कार देते थे।

एक दिन सुबह उस क्षेत्र का जमींदार कड़क सिंह अपने दो पुत्रों शंकर और चंदन को लेकर आश्रम में गया और गुरु से बोला, ''गुरुदेव, आपके विद्यालय का बड़ा नाम है। मैं चाहता हूँ कि मेरे बेटे शंकर और चंदन भी यहाँ पढ़ें।''

''जमींदार साहब, अगर आपके बच्चे परीक्षा में पास हो जाएंगे तो जरूर यहाँ पढ़ेंगे। आप इन्हें छोड़ जाइए और शाम को आइए।'' गुरु ने कहा।

''ठीक है।'' यह कहकर जमींदार चला गया।

गुरु ने शंकर और चंदन को एक-एक सुई दी और कहा, ''पास के गाँवों में जाओ और आश्रम के लिए सुई के दम पर कुछ ले आओ। ध्यान रहे, तुम दोनों अलग-अलग दिशा में जाना, एक साथ नहीं।''

शंकर और चंदन चले गए।

एक गरीब किसान भोलाराम भी अपने बेटे गोपाल को आश्रम में भर्ती कराने के लिए आया था। गुरु ने गोपाल को भी सुई थमाकर पास की बस्ती की ओर रवाना कर दिया।

शाम को जमींदार आश्रम में आया। उसने गुरु से पूछा, ''क्या हुआ, गुरुदेव! ले चुके परीक्षा? मेरे बच्चे कहाँ हैं?''

''बच्चे आते ही होंगे। वे गाँव में परीक्षा देने गए हैं। आप शांति से बैठिए, जलपान कीजिए।'' गुरु बोले।

''ठीक है, गुरुदेव।'' जमींदार बच्चों की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ देर में शंकर और चंदन आए। वे पिता को देखकर रोने लगे और गुरु की ओर संकेत करके उन्होंने कहा, ''इस बुड्ढे ने हमें पिटवा

दिया।''

''किसने पीटा तुम लोगों को? किसने दुस्साहस किया तुम लोगों के साथ मारपीट करने का? उनकी खाल खिंचवा लूंगा। और बाबाजी! आपने ये ठीक नहीं किया। कहाँ भेज दिए थे आप इन्हें?'' जमींदार भारी गुस्से में था। उसकी आँखें अंगार उगल रहीं थीं।

गुरु ने शंकर से पूछा, ''क्या मार पड़ी, बेटा?''

एक गुब्बारे वाला था। मैंने आश्रम के लिए उससे चंदा मांगा। उसने पैसे नहीं दिए तो मैंने क्रोध में आकर उसके कई गुब्बारों में सुई चुभो दी। मैं भागा, लेकिन उसने मुझे पकड़ लिया और पीट डाला।

''और तुम क्यों मारे गए, चंदन?'' गुरु ने दूसरे बच्चे से पूछा।

''एक किसान साइकिल पर गेहूँ की बोरी रखकर जा रहा था। मैंने आश्रम के लिए थोड़ा गेहूँ मांगा। उसने नहीं दिया तो मुझे गुस्सा आ गया। मैंने उसकी साइकिल में सुई चुभा दी। हवा निकलने लगी। किसान ने मुझे बहुत पीटा। मेरे गाल लाल हो गए।'' चंदन ने बताया।

उसी बीच तीसरा बच्चा गोपाल भी आ गया। उसे देखकर जमींदार चौंका।

''बेटे तुम यहाँ?'' जमींदार ने गोपाल से पूछा।

''जी।'' गोपाल ने हाथ जोड़कर जवाब दिया।

''आप इस बच्चे को जानते हैं?'' गुरु ने जमींदार से पूछा।

''जानता तो नहीं था, लेकिन रास्ते में इस बच्चे ने जो कुछ मेरे साथ किया, उससे इसे अच्छी तरह जान गया।'' जमींदार बोला।

''क्या किया इस बच्चे ने?'' गुरु ने पूछा।

''मैं चला आ रहा था तो रास्ते में मेरे पैर में बबूल का कांटा चुभ गया और अंदर ही टूट गया। मैं दर्द से तड़प उठा और वहीं बैठ गया। मुझसे उठा नहीं जा रहा था। तभी वहाँ यह बच्चा आया। इसने मेरा जूता उतार कर सुई से काँटा निकला। बहुत अच्छा लड़का है यह। मैंने इसे पाँच सौ रुपए पुरस्कार दिया।'' जमींदार ने बताया।

गुरु मुस्कराकर बोले, ''सुई देकर मैंने इन तीनों बच्चों को भेजा था। आपके बच्चे मार खाकर लौटे और यह बच्चा पुरस्कार लेकर आया। बताइए, आश्रम में किसका प्रवेश होना चाहिए?''

''निस्संदेह इस बच्चे का। मैं अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देकर अगले वर्ष लाऊँगा। मैं कोई दबाव नहीं दूंगा कि आप इन्हें प्रवेश दें।'' जमींदार बोला।

''बहुत ही अच्छा निर्णय है आपका। सुई से काँटा निकाला जा सकता है, किसी के फटे कपड़े सिले जा सकते हैं। यह सुई का सदुपयोग है। किसी को सुई चुभाना उसका दुरुपयोग है। बच्चों को चीजों का अच्छे कार्य में उपयोग करना सिखाना चाहिए।'' गुरु ने कहा।

''जी गुरुदेव! मैं समझ गया। मैंने जमींदारी के चक्कर में बच्चों की ओर ध्यान नहीं दिया। अब इन्हें उत्तम शिक्षा देकर अगले वर्ष परीक्षा दिलाने आऊँगा।'' जमींदार हाथ जोड़कर बोला।

''मेरा पूरा आशीर्वाद है। अवश्य ये बच्चे परीक्षा उत्तीर्ण करेंगे और आश्रम में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे।'' यह कहकर गुरु ने शंकर और चंदन के सिर पर हाथ रखा।

बच्चों का मन गुरु के प्रति आदर से भर गया। उन्होंने गुरु के पैर छुए और कहा, ''हमें क्षमा कर दीजिए। अगले वर्ष की परीक्षा हम अवश्य उत्तीर्ण करेंगे।'' बच्चों ने कहा।

बच्चों में बदलाव देकर गुरु का मन द्रवित हो गया। उन्होंने कहा, ''अगले वर्ष क्यों? मैं इसी वर्ष तुम दोनों को प्रवेश दूंगा। तुम्हारे ज्ञान–नेत्र खुल चुके हैं। आगे मैं तुम्हें तैयार कर, तुम्हारी कमियाँ दूर कर दूंगा।''

यह सुनकर जमींदार और शंकर–चंदन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

दोनों बच्चों का प्रवेश हो गया और वे मन लगाकर आश्रम में पढ़ने लगे। बच्चे कसौटी पर खरे उतर रहे थे। गुरु को उन पर गर्व था।

● **रायपुर (छ.ग.)**

पुष्करिणी के तीर पर

एक पुष्करिणी (छोटा तालाब)। किनारे पर एक सुन्दर सी झोपड़ी। दो अश्वारोही वहाँ आकर रूकते हैं। एक अश्वारोही दोनों घोड़ों को लेकर पुष्करिणी में पानी पिलाने आता है।

अचानक सिसकियां लेकर रोने की आवाज सुनाई देती है। अश्वारोही चौंकता है। दूसरा अश्वारोही भी यह आवाज सुनता है। दोनों झोपड़ी की ओर बढ़ते हैं। पहला झोपड़ी के द्वार पर पहुँच जाता है, दूसरा उस की एकमात्र खिड़की के पास खड़ा हो जाता है। सिसकियों के बीच एक करुण स्त्री–स्वर सुनाई देता है– ''माँ भवानी, मुझे क्षमा कर! मेरे पास और उपाय ही क्या बचा है, सिवाय आत्महत्या के।''

दूसरे अश्वारोही के संकेत पर पहला अश्वारोही झोपड़ी के अन्दर चला जाता है और अन्दर का दृश्य देखकर स्तब्ध रह जाता है– एक युवती भवानी की मूर्ति के सामने अपने को फांसी पर लटकाने जा रही है। अश्वारोही छत से लटक रही रस्सी को अपनी तलवार से काट देता है। युवती संकोच में पड़कर एक और हटकर खड़ी हो जाती है। अश्वारोही दयार्द्र स्वर में पूछता है – ''देवि! तुम पर कौन सी विपत्ति आ पड़ी है, जिससे तुम इस तरह अपने जीवन का अन्त कर देना चाहती हो?''

''मेरा सम्मान, श्रीमन्!'' स्त्री ने सिसकते हुए कहा।

''तुम्हारा सम्मान अब सुरक्षित है अश्वारोही कहता है– '' अब तुम छत्रपति शिवाजी के स्वराज्य में हो, जिसके सेनापति राघोजी के रहते किसी की हिम्मत नहीं कि किसी स्त्री का सम्मान भंग करे।''

''सेनापति राघोजी।'' स्त्री सहमी, ''वही तो मेरा सम्मान नष्ट करने पर उतारू हैं।''

अश्वारोही चौंका– ''वह कैसे?''

स्त्री ने अपनी संकट की पूरी कहानी बतायी– ''राघोजी के अधीन मेरे पतिदेव सैनिक थे। वे युद्ध में काम आये। राघो जी एक बार उनके साथ मेरे घर आया था। तभी उसने मुझे देखा था और अब जब कि मैं अकेली रह गयी हूँ तो वह मेरी मजबूरी का अनुचित लाभ उठाना चाह रहा है। वह कल यहाँ आने वाला है। इसीलिए मैं आज अपने जीवन का अंत कर लेना चाहती हूँ। कृपया मुझे करने दीजिए''– और वह फिर सिसक–सिसक कर रो उठी।

दोनों अश्वरोही ने उसकी कहानी सुनी। दूसरे अश्वरोही ने कहा– ''देवी, स्वयं छत्रपति तुम्हारे निवास के बाहर खड़े तुम्हारी कहानी सुन रहे हैं। मैं उनका साथी नेताजी पाल्हकर हूँ। तुम निर्भय रहो। मैं तुम्हें वचन देता हूँ, तुम्हारे सम्मान को आँच नहीं आयेगी। तुम्हें आत्महत्या की कोई आवश्यकता नहीं।''

युवती ने खिड़की की ओर हाथ जोड़ कर उठा दिये। नेताजी पाल्हकर दरवाजे से बाहर आ गये।

शिवाजी और नेताजी वहीं से लौट पड़े। दोनों के बीच एक अक्षर बात नहीं हुई।

छत्रपति गंभीर मुद्रा में चलते जा रहे थे। उनके मस्तिष्क में विचारों का तूफान चल रहा था–कितना बड़ा धोखा। मेरा सेनापति ही भ्रष्टाचार का पोषक। कल जिस राघोजी को प्रधान सेनापति बनाकर सम्मानित करने जा रहा था, वही राघोजी इतना पातकी। और मैं उसे परख भी न सका। कितना बड़ा अनर्थ होता, यदि मैं उसे प्रधान सेनापति बना देता तो उसके हाथों स्वराज्य की स्त्री के सम्मान का क्या हाल होता। माँ भवानी ने मेरी रक्षा की।''

रायगढ़ पहुँचे तो एक संक्षिप्त घोषणा की– ''राघोजी का सम्मान करने के लिए कल होने वाला समारोह स्थगित कर दिया गया है।''

दूसरी शाम। एक अश्वारोही चुपके से किले से निकलता है। अंधेरा हो चला है, दो अन्य अश्वारोही उसका अनुसरण कर रहे हैं, लेकिन उसे पता नहीं चलता है।

घण्टेभर की यात्रा पूरी कर अश्वारोही पुष्करिणी पर स्थित झोपड़ी के द्वार पर दस्तक देता है। दरवाजा खुलता है, लेकिन स्त्री हताश हो पीछे हट जाती है। वह कल आये दोनों अश्वारोहियों के आने की प्रतीक्षा में थी, लेकिन यह तो राघोजी ही है। स्त्री आशंका से सिहर उठी है।

राघोजी स्त्री को भेड़िये जैसी दृष्टि से घूर रहा है। वह कहता है– ''आज रात मैं ऐसे नहीं जाऊँगा। अब यहाँ कोई नहीं है जो तुम्हें बचाये।''

''है।'' दो शांत किन्तु कठोर स्वर झोपड़ी में गूंज उठते हैं। राघोजी को काटो तो खून नहीं। सामने छत्रपति खड़े हैं। उनकी आँखों से अंगारे बरस रहे हैं। उनके बगल में नेताजी पाल्हकर हैं, नंगी तलवार उठाये हुए।

''राघोजी!'' छत्रपति कठोर स्वर में कहते हैं– ''अगर मैंने यह सब अन्य किसी से सुना होता, तो शायद विश्वास न कर पाता कि मेरा एक वीर सेनापति भी इतना निकृष्ट कर्म कर सकता है।''

राघोजी सिर झुकाए चुप खड़ा है।

''राघोजी! महाराज धीरे–धीरे किन्तु संयत स्वर में कहते जा रहे हैं, ''तुमको नौकरी से हटाया जा रहा है और तुम्हें स्वराज्य में आने की मनाही है।''

''लेकिन महाराज!'' नेताजी निवेदन करता है– ''क्या आप अपने अत्यंत योग्य सेनापति को खो देंगे?''

''मुझे पता है'', छत्रपति दृढ़ स्वर में कहते हैं – ''लेकिन इसकी चिंता मुझे नहीं है। एक सेनापति के स्थान पर दूसरा सेनापति मिल सकता है, लेकिन स्त्री का सम्मान खोने पर फिर नहीं मिलता।''

विषय एक कल्पना अनेक

बादल

रोज कहाँ से आते बादल

● अरविन्द कुमार साहू

शिक्षक जी, हमको समझाओ, रोज कहाँ से आते बादल?
बिना बाल्टी-लोटा के ही, कैसे जल भर लाते बादल?
किस छलनी से छान-छान कर नन्हीं बूंद बनाते बादल,
कुँए, बावड़ी, झील, नदी सब ऊपर तक भर जाते बादल,
जाने किस नल की टोंटी से, पानी खूब बहाते बादल?
बल्ब, बैटरी कहीं न दिखती, पर बिजली चमकाते बादल,
बिन लाऊड-स्पीकर के ही, गरज-गरज चिल्लाते बादल,
किसकी फ्रिज में बर्फ जमा कर, ओले गोल बनाते बादल?
आसमान में भालू-बन्दर, जैसी शक्ल दिखाते बादल,
इतने काले, मैले दिखते, पर खुद नहीं नहाते बादल,
पंख नहीं है इनको फिर भी, कैसे उड़कर आते बादल?

● ऊँचाहार (म.प्र.)

काले मेघा

● डॉ. रामनिवास 'मानव'

काले मेघा पानी दे।
पानी दे, गुड़-धानी दे।

पानी की तू झड़ी लगा।
खेतों में तू फसल उगा।
फसलो में सोना उपजे,
ऐसा मीठा पानी दे।

● हिसार (हरियाणा)

रेशम-सी हरियाली दे।
चांदी-सी खुशहाली दे।
चिड़िया का मन चहक उठे,
ऐसी भोर सुहानी दे।

देख-देख मन भरा नहीं।
गरज-गरज कर डरा नहीं।
रोज तुम्हारी कथा कहें,
ऐसे नानी-नानी दे।

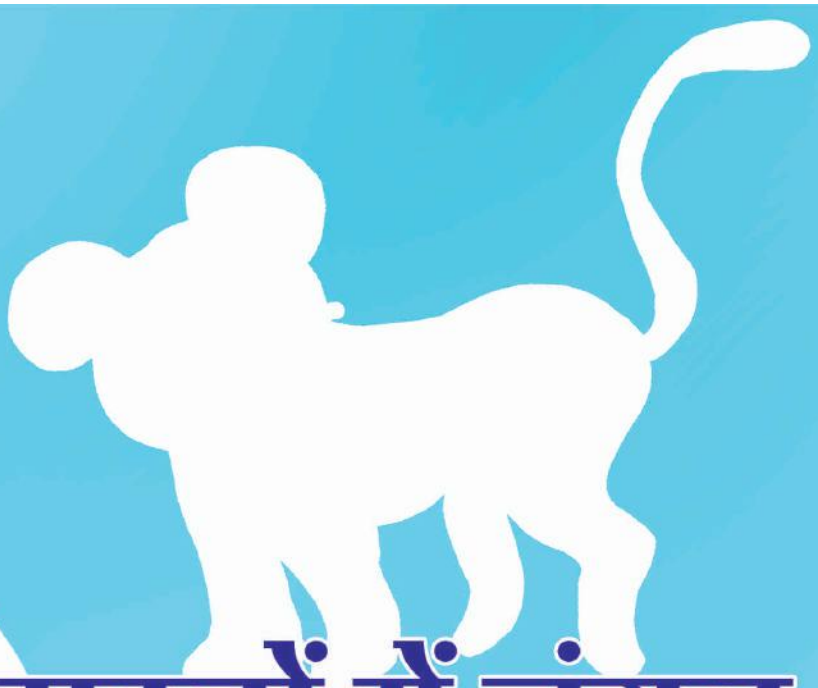

बादलों में जंगल

• डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

गर्मी से राहत देने को,
बादल भैया लाए जल।

श्यामा पहुँची झट से छत पर,
देख गगन को चिल्लाई।
भालू नभ में नाच रहा है,
बंदरिया डमरू लाई।
अभी शेर भी आता होगा,
फिर होगा नभ में दंगल।

तभी अचानक मोहित बोला,
यह तो घोड़ा है दीदी।
रथ को लेकर दौड़ रहा है,
कितना तगड़ा है दीदी।
सारे प्राणी आ पहुँचे हैं,
बना बादलों में जंगल।

बादल भैया ने खुश होकर,
बरसाया झम झम पानी।
झूम उठे सब ताल तलैया,
नाची फिर दादी नानी।
इन्द्रधनुष छा गये गगन में,
धरती पर बिखरा मंगल।

• शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'बादल' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

आपकी कविता

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

खट्टी मीठी गोली

कहानी : डॉ. प्रभा पंत

गीता और नीता खट्टी मीठी गोली के लिए झगड़ते देखकर, उनके पड़ोसी ने गीता और नीता का हाथ पकड़ा और बोले, ''चल, मेरे साथ मैं तुझे गोली दिलवाऊँगा।'' उमेश नाम का वह व्यक्ति उनके मकान में किराए पर रहता था। वह जब-तब बच्चियों को खाने-पीने की कोई न कोई चीज दिलवाता रहता था। नीता ने उसका हाथ झटक दिया, लेकिन गीता बिना ना-नकुर किए उसके साथ चली गई। मोहल्ले की दुकान में पहुँचकर उमेश ने एक रुपए की दो गोलियाँ ली और गीता की हथेली में रखकर, उसकी मुट्ठी बंद करते हुए कहा, ''अब झगड़ना नहीं।'' जब भी कुछ खाने का मन करे मुझसे कहना।'' गीता ने मुस्कराते हुए, गर्दन हिलाकर हामी भरी और दौड़ती हुई अपने घर चली गई।

गीता कक्षा पाँच में पढ़ती थी और नीता तीन में। गीता बहुत सीधी-सरल थी, किन्तु नीता अपनी उम्र के बच्चों की तुलना में अधिक बुद्धिमान और समझदार थी। नीता कुछ दिनों से देख रही थी कि उस दिन के बाद उसकी दीदी, उमेश भैया को देखते ही दौड़ती हुई उनके पास पहुँच जाती है। एक दिन जब वह दोनों कमरे में बैठी पढ़ रही थीं तो नीता ने देखा उसकी दीदी ने अपने बस्ते में से कुछ निकाला और अपने मुँह में डाल लिया। नीता झट से बोली, ''दीदी! आप क्या खा रही हो, मुझे भी दो। गीता सकपका गई, क्योंकि आज पहली बार उसकी चोरी पकड़ी गई थी, जबकि वह तो हर दिन इसी तरह, छिप-छिपकर खाया करती थी। गीता बोली, ''मैंने देखा था, आपने अपने मुँह में कुछ डाला, आऽऽऽऽ करो, मुझे आपका मुँह देखना है।''

''नहीं मैं नहीं दिखाऊँगी।'' कहकर गीता ने अपनी बहन को धक्का देकर दूर कर दिया। नीता को अपनी दीदी के इस व्यवहार पर बहुत गुस्सा आया, उसने अपनी किताब बंद की और उठती हुई बोली, ''अब देखना, मैं माँ से आपकी शिकायत करूँगी.... मुझे सब पता है...आपको उमेश काका ने चीज दिलाई होगी।'' गीता ने लपककर नीता का हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए कहा, ''तू माँ को कुछ मत बताना...ले तुझे जो भी खाना है खा ले।'' यह कहकर उसने अपना बस्ता नीता की ओर बढ़ा दिया। बस्ते के भीतर रंग-बिरंगी गोलियाँ देखकर, नीता की आँखें खुली रह गई, उसने अपनी पसंद की कुछ गोलियाँ निकालीं और अपनी जगह जाकर बैठ गई। उस दिन के बाद जब भी उमेश गीता को गोली चॉकलेट या चिप्स जो भी देते थे, वह अपनी बहन को बिना माँगे ही दे दिया करती थी।

एक दिन की बात है माँ के मना करने पर भी जब गीता अपनी जिद पर अड़ी रही तो उसकी माँ ने गीता का कान ऐंठते हुए कहा, ''मैं देख रही हूँ, तू आजकल हठी होती जा रही है। आज अगर तूने अपनी आलमारी में बिखरी किताबें ठीक से नहीं लगायी तो देखना।''

''नहीं लगाऊँगी...जब देखो मुझे ही काम बताती रहती हैं...नीता से कभी कुछ नहीं कहती।'' गीता ने पलटकर कहा। उसके उल्टे उत्तर ने आग में घी डालने जैसा काम किया, गुस्से में तिलमिलाकर माँ ने गीता के कोमल से गालों पर इतने तमाचे जड़े कि उंगलियों के निशान बन गए। गीता पीड़ा और गुस्से से चीख-चीखकर रोने लगी। गीता के रोने की आवाज सुनकर, उमेश से न रह गया। वह अपने कमरे से बाहर निकल आए, उन्होंने पुचकारते हुए गीता के आँसू पोंछे और उसका हाथ पकड़कर बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठ गए। उसे समझाते हुए बोले, ''बेटा माँ से इस तरह बात नहीं करते। अब तुम बड़ी हो गई हो। तुम्हारे पिताजी बाहर रहते हैं...घर का

सारा काम तुम्हारी माँ को अकेले करना पड़ता है... तुम्हें तो अपनी माँ का हाथ बँटाना चाहिए है न?'' उमेश की बात सुनकर गीता की माँ को ऐसा लगा, जैसे वह इस परिवार के सबसे बड़े शुभचिंतक हैं। उनके हृदय में अपने प्रति इतनी सहानुभूति देखकर वह अभिभूत हो उठी। उसकी भाव–भंगिमा देखकर, अवसर का लाभ उठाते हुए, उमेश बोले, ''भाभीजी! यदि बुरा न मानें तो मैं गीता को अपने कमरे में ले जाऊँ? तब तक आपका मन भी शांत हो जाएगा।'' उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह गीता का हाथ थामकर अपने कमरे की ओर चल दिए। माँ! मैं भी जाऊँ? नीता ने पूछा।

''जा...!'' कहकर गीता की माँ धुले कपड़ों से भरी बाल्टी उठाकर, कपड़े फैलाने छत पर चली गई। दोनों बच्चियों को अपने पलंग पर बैठाकर उमेश रसोईघर में गए और थोड़ी देर बाद नमकीन–बिस्कुट भरी प्लेट लाकर उनके सामने रख दी। पहले दोनों बहनें खाने में झिझक रही थीं, किन्तु जब उमेश जी हँसी–मजाक करते हुए, स्वयं भी उठाकर खाने लगे तो बातें करते–करते सबने मिलकर प्लेट खाली कर दी। कुछ देर बाद उन्होंने नीता से कहा, ''बेटी! अब तुम्हें घर जाना चाहिए...तुम्हारी माँ घर पर अकेली उदास बैठी होंगी।''

''नहीं काका! माँ उदास नहीं बैठी हैं, वह तो कपड़े सुखाने छत पर गई है।'' नीता झट से बोली।

''लेकिन बेटी! किसी को तो उनके पास होना चाहिए न? गीता को कुछ देर मेरे पास रहने दो...अभी आपकी माँ इससे नाराज है न... कहीं उनका गुस्सा और बढ़ गया...और तुम्हारी दीदी की फिर से पिटाई हो गई तो।'' उमेश जी ने जैसे–तैसे समझा–बुझाकर नीता को घर भेज दिया। उसके बाद उन्होंने गीता को अपने पास बुलाया। गीता पलंग पर से उठी और उमेश जी की कुर्सी के पास आकर खड़ी हो गई। ''तेरी माँ ने कितनी जोर–जोर से चांटे मारे हैं... इतने प्यारे गाल मारने के लिए नहीं चूमने के लिए होते हैं।'' कहकर, उमेश ने गीता के गालों को चूम लिया। गीता को फिर से माँ की मार याद आ गई और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे...।

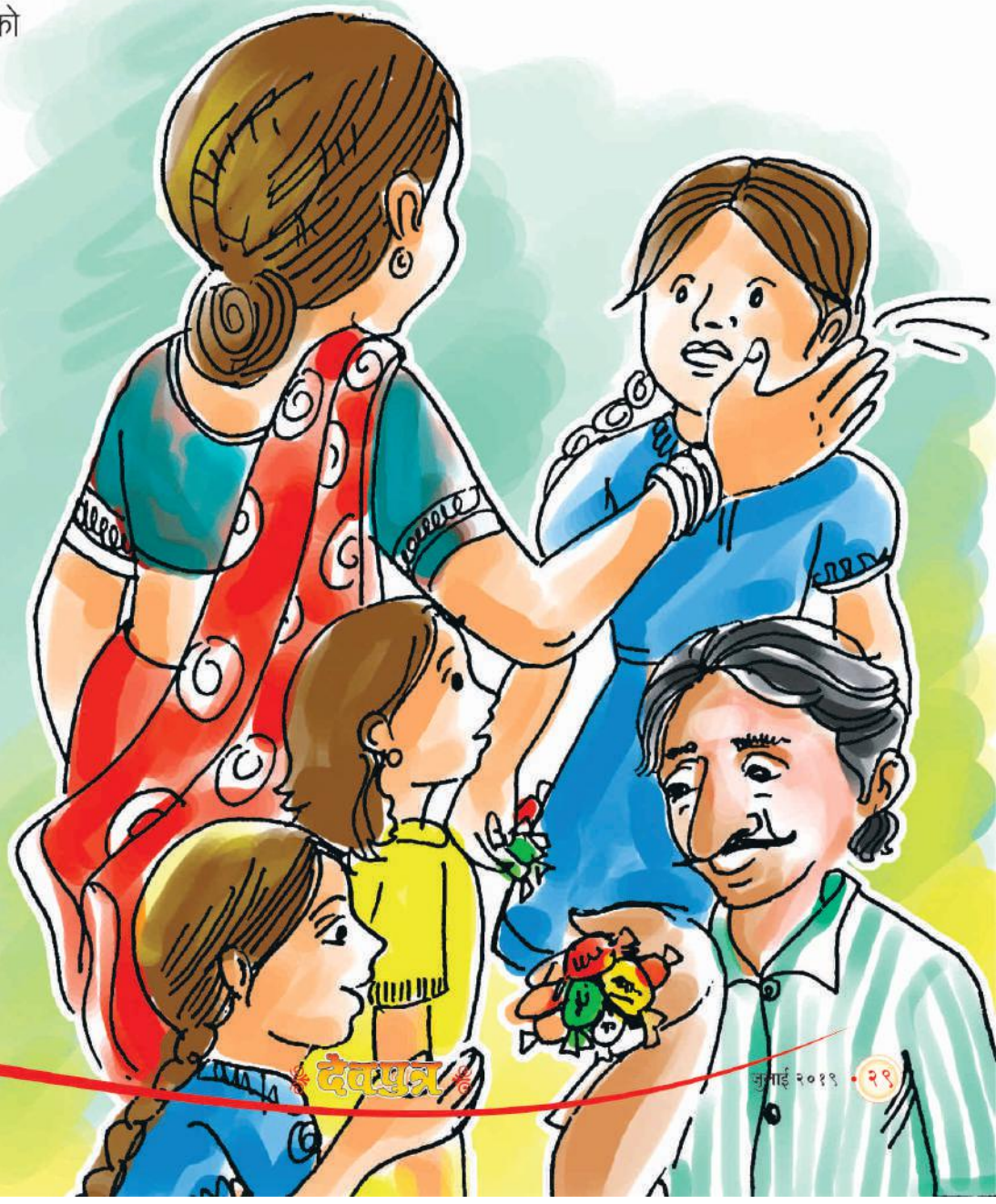

उमेश जी की पत्नी को परलोक सिधारे दो वर्ष हो चुके थे। दो बेटियाँ थीं, एक अपने ससुराल में थी और दूसरी छात्रावास में। वह पुलिस विभाग में नौकरी किया करते थे, यह सारी बातें उन्होंने तीन चार महिने पहले मिश्रा जी को तब बताई थीं जब वह किराए के लिए बात करने उनके घर आए थे। मिश्रा जी ने उन्हें यह सोचकर अपने यहाँ किराएदार रखा था कि पुलिसवाले के रहने से मेरा घर परिवार सुरक्षित रहेगा, ''रो मत, तू मेरे साथ चल, मैं तुझे तेरी पसंद की फ्राक, माला, चॉकलेट, गोलियाँ जो कहेगी दिलवा दूँगा।'' अधेड़ उम्र के उमेश काका इस अवसर को खोना नहीं चाहते थे, जिसकी प्रतीक्षा वह न जाने कब से कर रहे थे। अब तक वे गीता के लालची स्वभाव को भलीभाँति जान चुके थे। उन्होंने गीता को खरीददारी का लालच दिया और उसे अपने साथ लेकर चले गए।

अपने हठी और लालची स्वभाव के कारण गीता ने माँ की दी हुई हर सीख भुला दी और एक धूर्त व्यक्ति के जाल में फँसने ही वाली थी कि तभी उसे याद आया, रक्षाबंधन पर जब बुआ घर आई थी तो पड़ोस के भैया द्वारा दिए गए उपहार को देखकर उनहोंने कहा था, ''बिटिया! किसी बाहरी व्यक्ति से न तो महँगे उपहार लेने चाहिए और न उनके साथ कभी घर से बाहर जाना चाहिए। यदि कभी कोई काका, शिक्षक या भैया तुम्हें लालच देकर अपनी गोद में बिठाए, या तुम्हारे शरीर को गलत ढंग से छूने का प्रयास करे तो माँ पिताजी से अवश्य शिकायत करना। ताकि वह उसे जेल भेज सकें। आजकल टी.वी. और अखबारों में ऐसे लोगों से सावधान रहने के लिए समाचार छपते रहते हैं जो बच्चों से मीठी-मीठी बातें करके या उनकी मनपसंद चीजे दिलाने का लालच देकर, उन्हें अपने साथ ले जाते हैं और उन्हें गुण्डों को बेच देते हैं।'' बुआ की बातें याद आते ही गीता, ''काका! मैं अभी आई, वह पड़ोस वाली ताई मुझे बुला रही है।'' कहती हुई स्वयं को उमेश काका के चंगुल से बचाकर, भागती हुई अपने घर लौट आई और माँ से लिपट गई। अब वह समझ चुकी थी, माँ की मार-फटकार भी हमारी भलाई के लिए ही होती है।

● **हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)**

आपकी पाती

● **राजा चौरसिया, कटनी (म.प्र.)**

देवपुत्र पत्रिका बच्चों को सुसंस्कारित करने की दिशा में बरसों बाद आज भी जस की तस संकल्पित है। खेत में खड़ी कुछ बालियों को गिनना सरल है लेकिन उनके दानों को गिनना बहुत कठिन है। इसी प्रकार देवपुत्र के अंक खँगालकर बहुमुखी विशेषताएँ प्रस्तुत करना कठिन कार्य है। ''अपनी बात'' (जून २०१९) के अंतर्गत अध्यापक और बच्चे की समझ के माध्यम से यह उदाहरण देकर बताया गया है कि बच्चे की भूख को बच्चा ही जानता है। बाल जगत के प्रति आपकी यह संवेदनशील अपील अति प्रासंगिक है कि परोपकारी स्वभाव से पढ़ाई को सार्थक बनाना चाहिए। विचार ही आचार का आधार है।

सामग्री के चयन तथा बहुरंगी साज-सज्जा पूर्ण प्रकाशन के लिए आपके संग आपकी टीम भी भरपूर प्रशंसनीय है।

पिताजी की परेशानी

चित्रकथा : देवांशु वत्स

।। संस्मरण ।।

मेरे घर आए दो नन्हें पखेरू

कहानी : मोनिका जैन 'पंछी'

छत पन बने रोशनदान में कबूतरों का एक जोड़ा बहुत लम्बे समय से रहता आया है। छत पर ही मेरा कमरा है तो कमरे में आते–जाते समय मार्ग में उन कबूतरों से भेंट होती रहती है। पिछले साल उन्होंने अचानक तिनके लाना शुरु किया। मैं जब भी ऊपर आती तो झरोखे के नीचे धरती पर बहुत से तिनकों का ढेर नजर आता। एक दिन झरोखे में देखने पर पाया कि कबूतर एक दो तिनकों को मुँह में रखे कबूतरी के चारों और घोंसला बनाने की कोशिश कर रहा है। पर झरोखे में तो कुछ टिकता ही नहीं अब सब तिनके नीचे गिर जाते हैं। प्रतिदिन सब तिनकों के गिर जाने के बावजूद भी कबूतर ने उसी जगह पर घोंसला बनाना प्रारंभ रखा। ध्यान से देखने पर पाया कि रोशनदान की पट्टी ढलान में थी और संकरी भी, इसलिए वहाँ तिनके अधिक देर टिकते ही नहीं थे और कोई टिक भी जाता तो कबूतर–कबूतरी की हलचल से वह भी गिर जाता। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इन दोनों को कैसे समझाऊँ कि यह घोंसला बनाने की सही जगह नहीं है। कबूतर को प्रतिदिन व्यर्थ की मेहनत करते देखना अच्छा नहीं लग रहा था।

कुछ दिनों बाद नीचे धरती पर एक अंडा गिरा हुआ देखा, जो फूट चुका था और ऊपर झरोखे से उदास कबूतर–कबूतरी उसे एकटक झाँक रहे थे। उनकी उदासी कुछ मुझमें भी उतर आई। अगले दिन से घोंसले के लिए उनके द्वारा तिनके लाने और तिनकों का गिर–गिरकर नीचे ढेर लग जाने की कहानी फिर से प्रारंभ हो गई। फिर से कोई अंडा फूटेगा तो? इस आशंका से मैं फिर से इस समस्या के हल के बारे में सोचने लगी। तभी एक उपाय सूझा।

मैंने एक मिठाई के खाली डिब्बे को खोजा। उसका ढक्कन हटाकर उसमें कुछ कपड़े बिछा दिये। सोचा यह तो शायद ऊपर टिक जाएगा। उस दिन मैं घर पर अकेली थी। स्वास्थ्य ठीक न होने से चलते इतना ऊपर चढ़ना उचित तो नहीं था, पर अब और रुकने का खतरा नहीं लिया जा सकता था। मैं बड़ी ऊँची कुर्सी जैसे–तैसे उठाकर लाई। कबूतरों को थोड़ी देर के लिए भगाया और डिब्बे को हाथ में लेकर ऊपर चढ़ी। उसे वहाँ अच्छे से रखा और नीचे उतर आई।

अब देखना यह था कि कबूतर–कबूतरी क्या करते हैं? वे डिब्बे को स्वीकार करेंगे भी या नहीं, इस आशंका से मैं कुछ दूरी से झरोखे पर ही आँखें गड़ाये खड़ी रही। थोड़ी देर में ही कबूतर–कबूतरी उड़ कर वहाँ आ पहुँचे थे। बड़े ही कौतूहल से वे डिब्बे का निरीक्षण कर रहे थे। मेरे दिल की धड़कने थोड़ी–सी तीव्र हो गई। दोनों ने दायें–बायें, अंदर–बाहर सब जगह अच्छे से झाँक लिया और फिर दोनों उस डिब्बे के अंदर बैठ गए। कबूतरों को अपना नया घर पसंद आया था। मैं भीतर गई और अपना काम करने लगी।

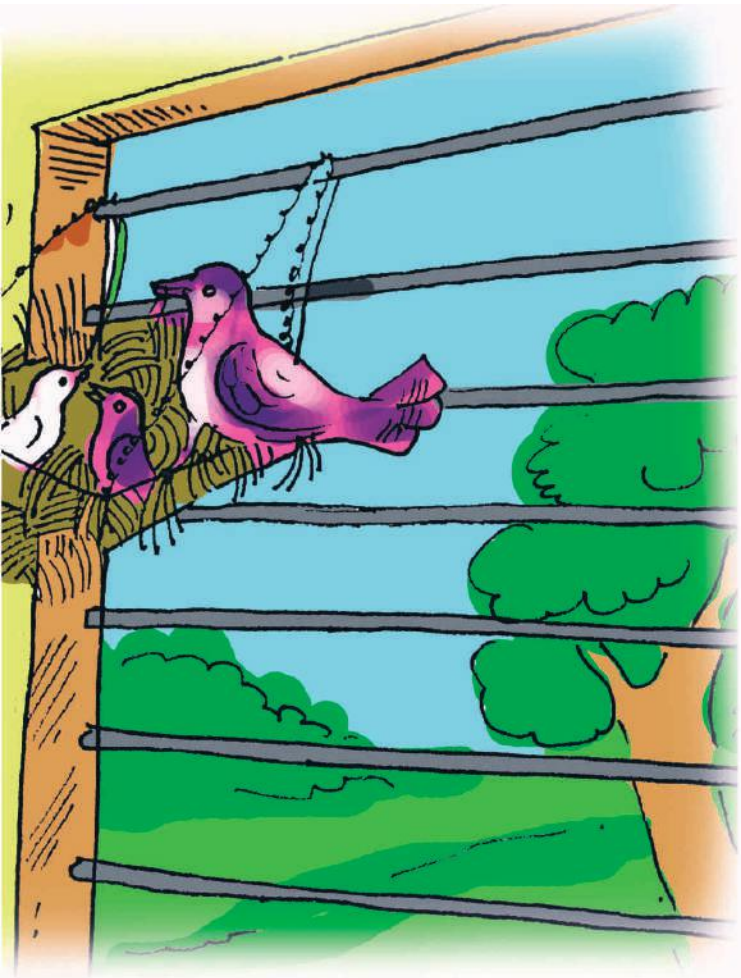

थोड़ी देर बाद बाहर आयी तो देखा डिब्बा तो नीचे गिरा है। फिसलर ही गिरा होगा, अब क्या किया जाए? तब सुई धागे की मदद से एक मजबूत धागा डिब्बे की एक ओर से निकालकर उस पर बाँध दिया। यह तो आसान था, पर अब कठिन काम था इस डिब्बे को झरोखे में जमाना। मैं फिर से स्टूल की सहायता से ऊपर चढ़ी। डिब्बे में लगे धागे पर जो सुई पिरोई हुई थी उसे झरोखे के छेद में में दूसरी ओर डाला। डिब्बे को सीधा रखा और नीचे उतर आयी। स्टूल को उठाकर दूसरे पार जहाँ सीढ़ियाँ थी वहाँ ले गयी। स्टूल रखा, फिर से चढ़ी और धागे वाली सुई को इस पार निकाल लिया और अच्छे से बाँध दिया। डिब्बा जम चुका था और मुझे लग रहा था जैसे मैंने कोई किला जीत लिया हो।

अगले दिन देखा कबूतर ने डिब्बे में भी तिनके बिछा दिये हैं। आखिर उनका घर कुछ–कुछ घोंसले–सा भी तो लगना चाहिए न! अब मैं थोड़ी निश्चिंत हो गई। पर जब भी ऊपर–नीचे आती जाती तो एक दृष्टि उन पर डाल लेती। कुछ दिनों बाद देखा कि अब कबूतरी लगातार घोंसले में ही बैठी रहती है। मैंने अनुमान लगाया कि उसने अंडे दे दिये होंगे। नीचे दाना–पानी भी रख दिया तकि दूर न जाना पड़े। एक दिन तो दाना पानी उन्होंने खाया पर इसके बाद मैं जब भी देखती मुझे बस घोंसले में बैठी कबूतरी ही नजर आती, कबूतर कभी कहीं नजर ही नहीं आता। अगले दिन नीचे का दाना–पानी भी जस का तस ही था। हुआ क्या है? कहीं कबूतर को कुछ हो तो नहीं गया। कहीं वह निश्चिंत तो नहीं हो गया? यह कबूतरी बिना खाये–पीए ऐसे कब तक बैठे रहेगी? अब मैं क्या करूँ? बाहर तो कबूतर को खोज नहीं पाऊँगी इसलिए सोचा गूगल करती हूँ।

पढ़ते पढ़ते पता चला कि अंडे सेने के लिए कबूतर और कबूतरी दोनों प्रतिदिन निश्चित समयावधि की पारी करते हैं। सुबह लगभग १० बजे से लेकर दोपहर बाद ४ बजे तक आसपास तक कबूतर अण्डों पर बैठता है और दोपहर बाद ४ बजे से लेकर सुबह १० बजे तक कबूतरी। इस बीच दोनों आसपास नहीं रहते। एक ही जगह इतने लम्बे समय के चलते यह संभव भी नहीं। पर मुझे विश्वास करना था। एक दो दिन तो मैं चूक गई और समय भी नहीं मिला। पर मैंने उन्हें जगह बदलते देख ही लिया। उस दृश्य को देखना बहुत रोमांचक था मेरे लिए। कबूतर आता, झरोखे की एक ओर बैठता, कबूतरी घोंसले से धीरे से उतरती और उसके उतरते ही कबूतर तुरंत होले से घोंसले पर चढ़ जाता। और इसके बाद लगातार १४ घंटों से बैठी कबूतरी फुर्र से उड़ जाती। फिर यही प्रक्रिया दोपहर बाद ४ बजे दोहराई जाती। सोच रही थी क्या आश्चर्यजनक दायित्वबोध और समय का अनुशासन होता है इन पक्षियों में। एक डर तो दूर हुआ पर एक डर और था बस धागे पर टिका था। उनका नीड़। तो बस धागा सही बंधा रहे, यह विचार जब तब आ जाता था।

धीरे–धीरे दिन गुजरते गये और एक दिन मैंने देखा कि कबूतर थोड़ा पीछे सरककर घोंसले में झाँक रहा है। मुझे समझते देर नहीं लगी कि अण्डों में से बच्चे निकल आये हैं। झरोखे की दूसरी ओर सीढियों से बच्चे दिखाई भी दे रहे थे और मैं गाने लगी मेरे घर आये दो नन्हें पखेरू।

● **भीलवाड़ा (राज.)**

।। मूल मराठी व्हाट्सएप कथा ।।

ईश्वर

अनुवादक : श्री रवीन्द्र क्षीरसागर

एक छोटा बालक एक स्थान पर प्रतिदिन घूम घूमकर फूल बेचता था। सर्दी, गर्मी, बरसात कोई भी ऋतु हो उसका नियम अटल था। गर्मियों में तपती सड़क पर उसके नंगे पैर खूब जलने लगते। उसे सहते हुए वह जोर जोर से पैर पटक कर जलन कम करने का प्रयत्न करता। एक दिन एक सज्जन ने उसकी यह दशा देखी तो करुणा से भर उठे। उन्होंने सामने की दुकान से एक जोड़ी चप्पलें खरीदीं और उसे पहना दीं। बच्चे को अपार सुख मिल रहा था। वह चप्पलें पहन प्रसन्नता से चल कर देख रहा था। अब उसे पैर नहीं जलेंगे सोच कर वह आनंद से भर उठा। अचानक उसने उन सज्जन का हाथ पकड़ा और भोलेपन से पूछा, ''काका! क्या आप भगवान हो?'' सज्जन अचानक ''नहीं नहीं मैं भगवान नहीं हूँ बेटे!'' अच्छा, तब आप भगवान के मित्र अवश्य होगें। क्योंकि मैंने कल ही भगवान के हाथ जोड़कर कहा था, ''भगवान, गरम सड़क पर मेरे पैर बहुत जलते हैं मुझे एक जोड़ी चप्पल दिला दो ना। भगवान ने ही आपको मुझे चप्पल देने के लिए भेजा है।'' सज्जन की आँखें भर आई, उनके बोल नहीं फूट रहे थे। वे वहाँ से चल पड़े। चलते–चलते सोच रहे थे हम ईश्वर नहीं बन सकते पर उसके मित्र तो बन ही सकते हैं।

● इन्दौर (म.प्र.)

चित्र बनाओ • राजेश गुजर

बच्चो, चिड़िया का चित्र

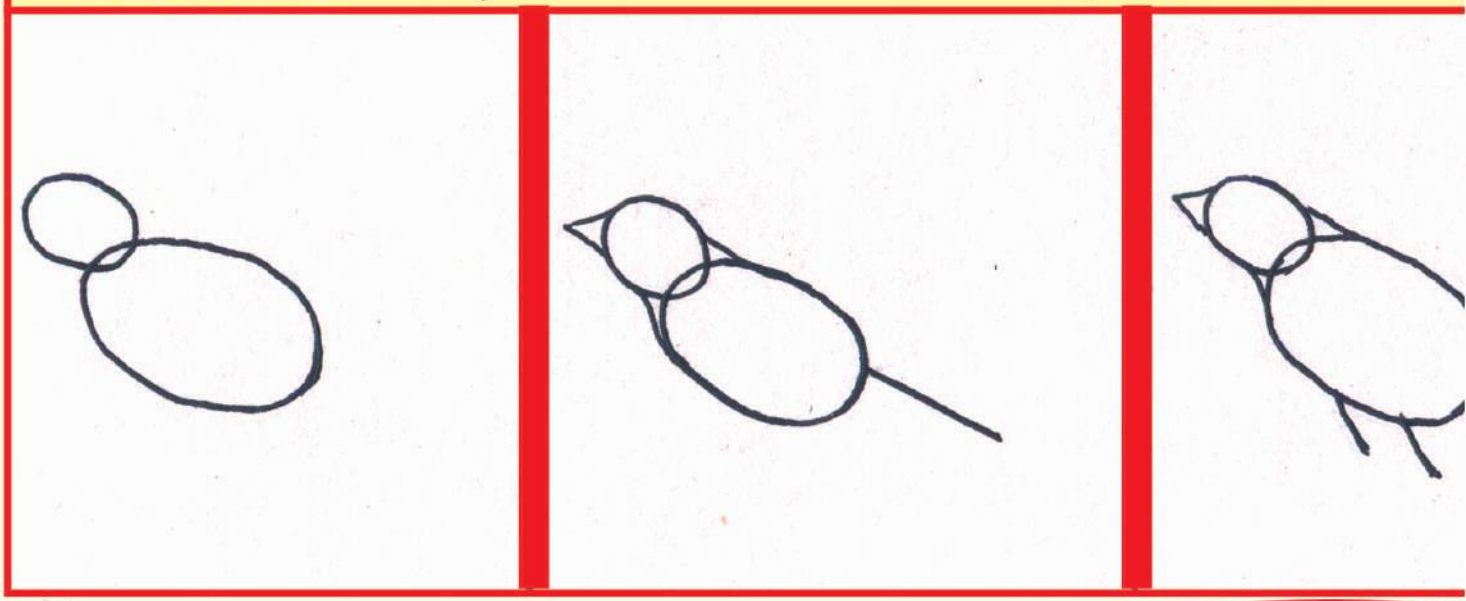

।। स्तम्भ ।।

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

संकलित

बच्चो! मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं को पढ़कर हमें अनुमान होता है कि वे कितने गंभीर स्वभाव के रहे होंगे। इतने बड़े लेखक को लिखने का मूड और वातावरण बनाना होता होगा और लेखन सामग्री भी खास होती होगी। प्रस्तुत प्रसंग आपकी धारणाओं को बदल कर न केवल प्रेरणा देंगे बल्कि आपको गुदगुदाएंगे भी।

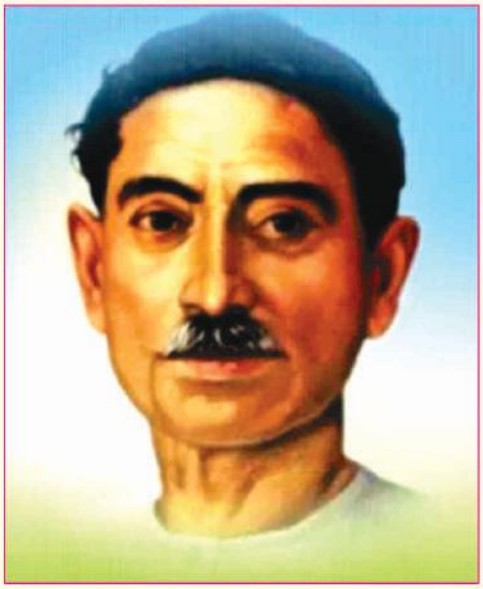

प्रख्यात उपन्यास सम्राट और कहानीकार मुंशी प्रेमचंद जब चाहे तब लिख सकते थे। उन्हे किसी बाहरी उपकरण की आवश्यकता नहीं थी। उनसे एक बार बातों बातों में कोई पूछ बैठा– ''मुंशी जी, आप कैसे कागज पर और कैसे पेन (कलम) से लिखते हैं।''

वे बहुत जोर से हँसे और बोले, ''ऐसे कागज पर श्रीमान! जिस पर पहले से कुछ लिखा न गया हो और ऐसे पेन से जिसकी निब न टूटी हो।''

*****

श्री प्रेमचन्द जी से अगर कोई बात करने बैठ जाता तो फिर वह उठ नहीं सकता था। वह उनकी बातचीत में इस तरह मग्न हो जाता था कि उठने का मन ही नहीं करता। अगर प्रेमचन्द जी को अपनी पत्नी शिवरानी देवी के रुष्ट होने का डर न होता तो वे चौबीसों घंटे बातचीत में डूबे रहने से भी नहीं ऊबते। एक दिन ऐसे ही प्रेमचन्द जी किसी से बातों में ऐसे रम गए कि दिन के पौने दो बज गए उन्हें समय का ध्यान ही न रहा। जैसे ही प्रेमचन्द जी का ध्यान घड़ी की ओर गया वे हड़बड़ा कर उठे और बोले, ''क्षमा करें भाई! फिर मिलूंगा।''

वह व्यक्ति प्रेमचन्द जी की हड़बड़ाहट देखकर पूछने लगा, ''क्यों सब ठीक तो है?''

मुंशी जी बोले, ''ठीक बस इतना ही है कि घर में ऊपर घड़ी नहीं हैं।''

आसानी से बनाओ और रंग भरो।

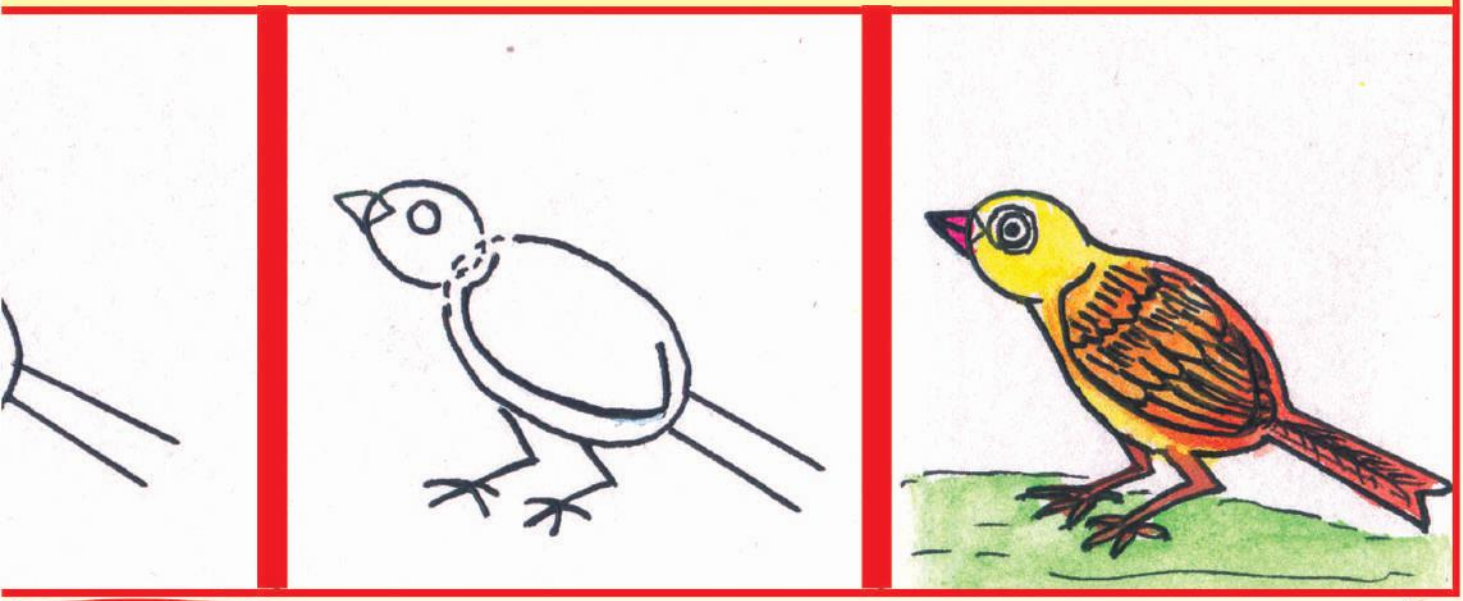

हम यूं सुनते हैं....

सचित्र विज्ञान चर्चा-
संकेत गोस्वामी

सुनना हमारे जीवन का महत्वपूर्ण कार्य है. तरह तरह की ध्वनियां हर पल हम तक पहुंचती हैं और हमें वे साफ सुनाई दें इसमें कान हमारी मदद करते हैं.

यह किस तरह होता है कि हम सुनते हैं ? ये समझने के लिए कान की संरचना को देखें

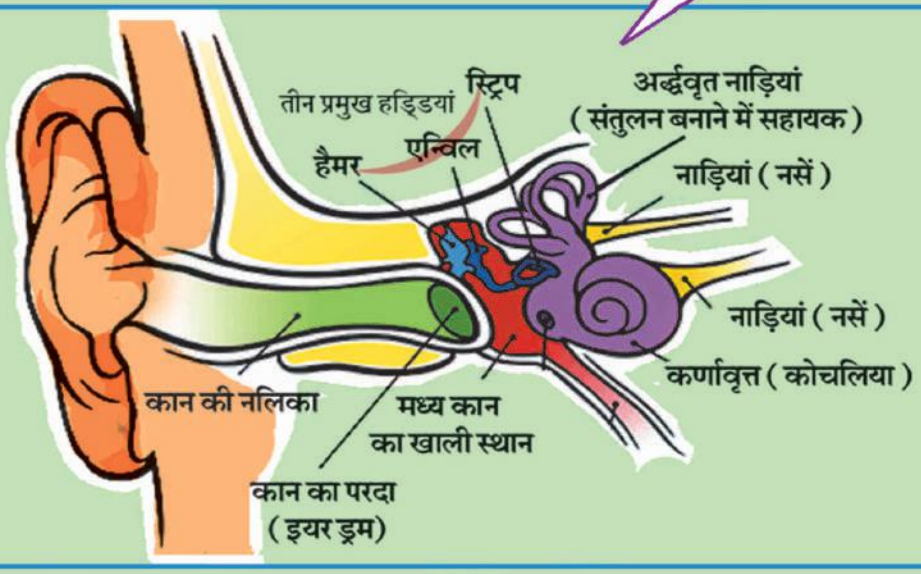

बनावट के आधार पर कान के तीन हिस्से होते हैं..

क्या आप को ये पता है कि कान हमें सुनने में ही मदद नहीं करते बल्कि अंदरूनी कान की अर्द्धवृत नाड़ियां हमारे शरीर का संतुलन बनाए रखने में भी हमारी मदद करती हैं.

और हम यूं सुनते हैं...

बाहरी कपनुमा कान ध्वनियों को इकट्ठे करके कान के परदे तक पहुंचाता है...

मध्य कान में परदे के ठीक पीछे की तीनों हड्डियां ड्रम पर कंपन करती हैं...

और ध्वनि को कर्णावृत्त तक पहुंचा देती हैं जो आंतरिक कान का हिस्सा है..

कर्णावृत्त एक नली के रूप में हड्डी के चारों ओर लिपटा होता है इसके अंदर हजारों रोंए होते हैं उनके खुले सिरे एक तरल पदार्थ में तैरते हैं जिससे ये नली भरी होती है...

ध्वनि के कर्णावृत्त तक पहुंचने पर यह तरल कंपन करता है इस कंपन से नाडियों के सिरे उत्तेजित होते हैं तब श्रवण स्नायुओं के जरिए मस्तिष्क को संकेत मिलता है

और मस्तिष्क ज्ञान कराता है कि वह ध्वनि क्या है जो हमने सुनी.

समाप्त

नदिया

कविता : दिनेश विजयवर्गीय

बलखाती इठलाती नदिया
कल-कल बहती जाती नदिया।
जन -जन की यह प्यास बुझाती
गाँव नगर में जाती नदिया।
हरा-भरा खेतों को करती
कृषकों को हर्षाती नदिया।
अवरोधों को दूर हटाती
अपने पथ पर जाती नदिया।
वन जीवों की प्यास बुझाती
वन में मंगल लाती नदिया।
धर्म-आस्था को पनपाती
जहाँ-जहाँ भी जाती नदिया।
कभी-कभी वर्षा की ऋतु में
बाढ़ भयंकर लाती नदिया।
जब नगरों का मैला ढोती
तो दूषित होती जाती नदिया।
साफ रखो जल सभी हमारा
अपनी पीर बताती नदिया।

● बून्दी (राज.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- मेघनाद की शक्ति के प्रहार से लक्ष्मण जी मूर्छित हो गये थे। उन्हें ठीक करने की औषधि किसने बताई?
- हस्तिनापुर के कुरु-वंश के कुलगुरु कौन थे?
- इन्डोनेशिया दो यूनानी शब्दों इण्डू और नीजिया से बना है। इन शब्दों के अर्थ क्या हैं?
- देवी के ५१ शक्तिपीठों में से एक तिब्बत में भी हैं, वह किस स्थान पर हैं?
- गायत्री मंत्र की रचना करने वाले ऋषि कौन हैं?
- प्रतापगढ़ दुर्ग के नीचे महाराज शिवाजी ने बीजापुर के किस क्रूर सेनापति को यमलोक पहुँचाया था?
- किस महाग्रंथ में प्रकाश की गति सही-सही बताई गई है?
- प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में वनवासियों की सेना बनाकर छत्तीसगढ़ के किस वीर ने अंग्रेजों को धूल चटाई?
- हाड़ी रानी से सेनानी माँगने वाले राव रतन सिंह चुण्डावत किस रियासत के राजा थे?
- नेताजी सुभाषचंद्र बोस कोलकाता से अंग्रेजों की आँखों में धूल झोंक कर किस नाम से काबुल पहुँचे?

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

|| बाल प्रस्तुति ||

हरियाली पर्व

कहानी : नवीन जैन

आज एक जुलाई थी। आलोक का आज पाँचवी कक्षा में, विद्यालय में पहला दिन था। वह आज विद्यालय गया, विद्यालय में उसे और सभी को सूचित किया गया कि विद्यालय में हरियाली अमावस्या को ''आओ धरा का श्रृंगार करें हम'' कार्यक्रम आयोजित किया जाना है। जिसमें विद्यालय मैंदान में ग्यारह पौधे लगाए जाएँगे। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए कक्षावार छात्रों के समूह को जिम्मेदारी सौंप दी गई। आलोक सभी बच्चों की तरह इस कार्यक्रम के लिए बहुत उत्साहित था। सारे विद्यालय को सजा दिया गया, सबने अच्छे–अच्छे नृत्य नाटक आदि तैयार किए। हरियाली अमावस्या आ गई, विद्यालय में अलग ही उत्साह छाया हुआ था। कार्यक्रम प्रारंभ हुआ क्षेत्रीय विद्यालय अधिकारी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे उन्होंने और विद्यालय के प्राचार्य जी ने एक साथ पौधा लगाया और साथ में फोटो खिंचवाया। फिर अन्य शिक्षकों ने, गणमान्य अतिथियों ने, विद्यार्थी समूह ने पौधे लगाए। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारंभ हुए। किसी बच्चे ने कविता पढ़ी किसी ने वृक्ष हमारा जीवन पर भाषण बोला। कुछ बच्चों ने मिलकर वन देवता नाटक का संदुर अभिनय किया। आलोक ने भी एक बहुत अच्छी कविता सुनाई।

बरसाते हैं जो बादल
हवा बहाते हैं शीतल
मिट्टी बांधे रखते
खड़े–खड़े भी न थकते
हमारे प्यारे मित्र वन
देते हमें स्वस्थ जीवन

सभी ने उसके प्रयास की प्रशंसा की और खूब तालियाँ बजाई। पर जब आलोक दूसरे दिन विद्यालय पहुँचा तो उसने देखा कि जो पौधे लगाए गए थे उनमें से चार–पांच पौधे तो पशुओं ने खा–उखाड़ दिए थे। आलोक को यह सब देखकर बहुत दुःख हुआ। उसे पता था कि पौधों में भी जीवन होता है उसे लगा कि पाँच जीव मर गए और प्रकृति का शोक कोई देख नहीं रहा क्यों? उसने देखा सब अपने–अपने काम में व्यस्त हैं। आलोक ने सोचा कि वह इन बचे पौधों को बचाएगा। आलोक मध्य अवकाश की बेला में अपने कुछ मित्रों के साथ पौधों के पास गया। कहीं कुछ टूटे ईंटों के टुकड़ों का ढेर लगा था। उन सभी पौधों के चारों और ये टूटे ईंट के टुकड़े तरीके से जमाने शुरु कर दिए। सभी पौधों को व्यवस्थित करने लगे। इतने में ही प्राचार्य उन बच्चों को ये सब करते देख उन बच्चों के पास गए और उन्होंने पूछा कि यह क्या कर रहे हो आप लोग? आलोक का मित्र बोला कि आचार्य जी कल हमने पौधे लगाए थे कुछ तो पशुओं ने नष्ट कर दिए कुछ बचे हैं हम उन्हें बचाने का प्रयास कर रहे हैं। आपने हमें उत्तरदायित्व जो दिया था पौधों की देखरेख का। प्राचार्य को बच्चों के मुँह से ये सुनकर बहुत दुःख हुआ कि कार्यक्रम के रंगारंग में अपने सच्चे उद्देश्य और कर्तव्य से विमुख हो गए, पर उन्हें गर्व हुआ इन बच्चों पर। उन्होंने उन बच्चों की पीठ थपथपाई और उनसे कहा आपने बहुत अच्छा काम किया। उन्होंने बाल सभा में आलोक और उसके साथी मित्रों के कार्य की प्रशंसा की और उन्हें इस कार्य के लिए पुरस्कृत भी किया और कहा कि निःस्वार्थ भाव से अच्छे कार्य करने वाले सदैव प्रशंसा के पात्र होते हैं। प्राचार्य जी ने अपनी भूल भी स्वीकार की और सबके सामने कहा कि अब वो स्वयं इन पौधों की देखभाल करेंगे और जो कुछ पौधे नष्ट हुए हैं उनके स्थान पर नए पौधे भी लगाएँगे। उन्होंने कहा प्रकृति हमारी माँ है वह हमें जीवन देती है हमें उसकी सेवा करनी चाहिए। उस दिन प्राचार्य जी को मन ही मन इस बात की खुशी रही कि उनके विद्यालय में ये नन्हे पौधे अच्छे परिवेश में बढ़ रहे हैं...वास्तव में छोटे बच्चों के बड़े काम ने आज विद्यालय के संस्कारों को महान बना दिया। वास्तव में आलोक की सोच ने ग्यारह पौधों को जीवनदान दे दिया, प्रकृति को कुछ और सदस्य दे दिए।

● बड़ा मल्हरा (म.प्र.)

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

अरूणाचल प्रदेश और असम का राज्यवृक्ष

हुलुंग

डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत के उत्तर-पूरब से,
इसका गहरा नाता।
लंका, बर्मा, चीन आदि में,
कहीं-कहीं मिल जाता।
मौसम मिट्टी कैसी भी हो,
अपना रूप दिखाता।
दलदल जंगल नदी किनारे,
सभी जगह मिल जाता।
सीधा ऊँचा तना अनोखा,
लगता बड़ा निराला।

पीला फल सर्दी में देता,
कड़े आवरण वाला।
मई जून के आते ही यह,
फूलों से भर जाता।
हल्के लाल-लाल फूलों से,
सारा जग महकाता।
इसकी उपयोगी लकड़ी से,
नाव मकान बनाते।
और जलाकर आग तापते,
सर्दी दूर भगाते।

● भोपाल (म.प्र.)

एक रंग

कविता : शोभा जैन

शैली बोली माँ से अपनी
आज एक बात बता दो
पहन एक सा वेश सभी क्यों
शाला जाते समझा दो
माँ बोली! शाला में जाते,
सब बच्चे हैं एक समान
एक साथ सब पढ़ते-लिखते
खेलें-कूदें पाते ज्ञान
सभी हो तो फिर
एक रंग ही भाता है
कौन है छोटा, बड़ा कौन है
भेद नहीं रह पाता है।

● इन्दौर (म.प्र.)

सुन्दर रंग भरो

● चांद मो. घोसी

केवड़िया की कुदान

कहानी : सुधा भार्गव

पानी बरसने से जंगल की मिट्टी भी सौंधी गंध से भर गई थी। हरे–भरे पेड़ पर बैठे तोते–तोती खुशी से चहक रहे थे। उनका एक कोमल सा बच्चा भी था जिसकी लाल चोंच बड़ी सुंदर थी। तोते ने उसे अपने पंखों से ढक रखा था ताकि लाड़ले को बरसाती हवा न लग जाए।

उस पेड़ के नीचे एक सांप का बिल था। उसमें पानी भर जाने से साँप का दम घुटने लगा। वह बिल से बाहर निकल आया और उस पेड़ पर चढ़ गया जहां तोता–तोती अपने बच्चे के साथ बड़े प्रेम से बैठे थे। साँप का स्वभाव बड़ा ही बुरा था। वह हमेशा दूसरों को तंग करने में लगा रहता। उनको देख उसकी आँखों में चमक आ गई। आह! बिना परिश्रम के ही भोजन मिल गया। तीनों को एक बार में ही दबोच लूँगा। तोता–तोती तो उसे देख तुरंत उड़कर दूसरे पेड़ की डाल पर

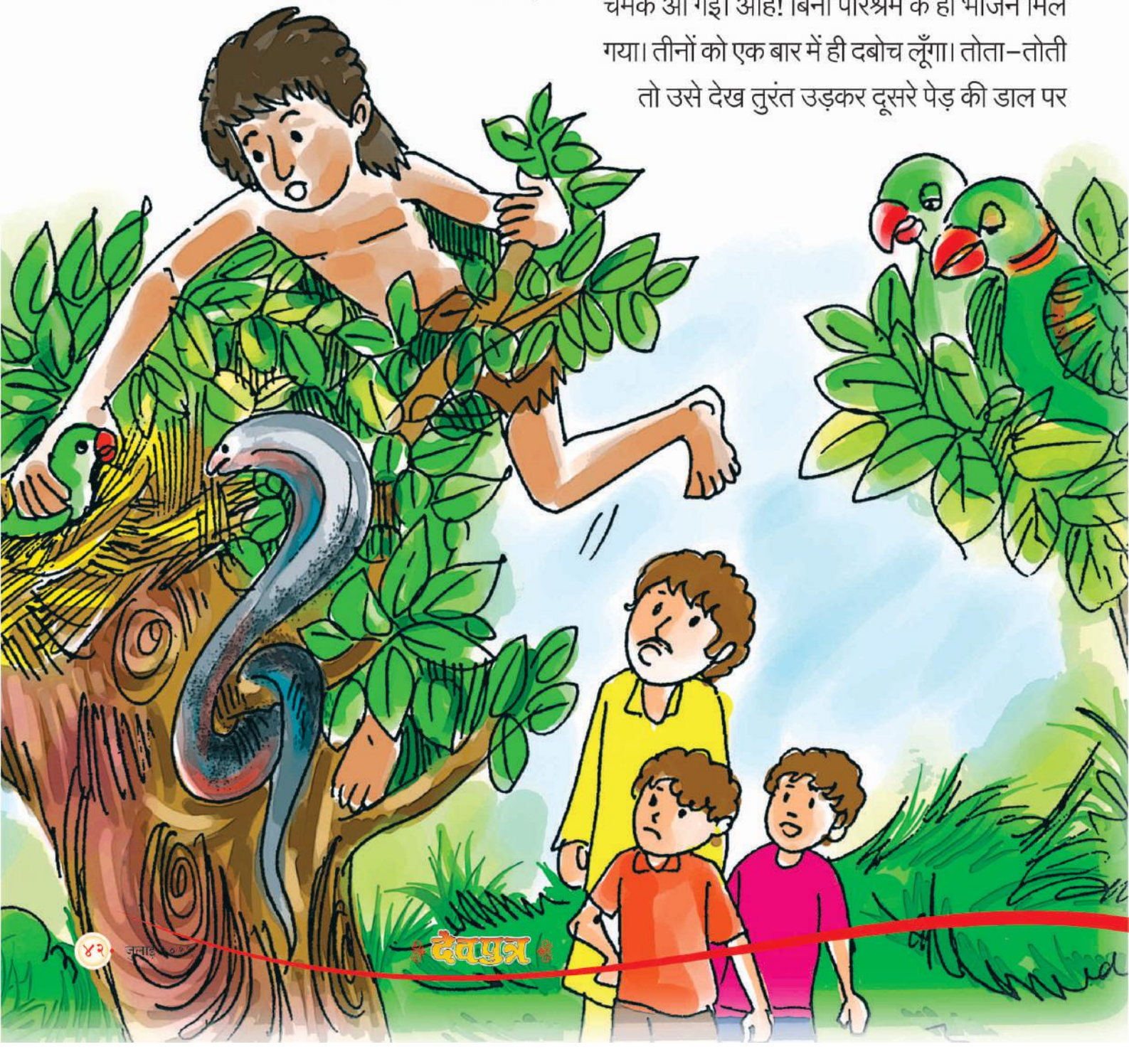

बैठ गए। पर नन्हा तोतू उड़ न पाया। उसके पंख तो ठीक से निकले भी न थे। साँप धीरे–धीरे उसकी ओर बढ़ने लगा और अबोध को दबोच लिया। वह उसकी सशक्त पकड़ से छुटकारा पाने के लिए छटपटाने लगा। तोता–तोती यह देख रोने लगे।

''टें–टें– साँप भैया, तोतू ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। उसे छोड़ दो।'' तोती गिड़गिड़ाई।

''क्यों छोड़ दू अपने शिकार को। यह क्या कम है कि तुमको छोड़ दिया। ज्यादा चबड़–चबड़ की तो एक ही छलांग में तुम्हारे पास पहुँचकर मिनटों में मसल दूंगा।''

साँप की विषैली बातें सुनकर बहुत से स्त्री–पुरुष, लड़के–लड़कियां उस पेड़ के नीचे जमा हो गए पर किसी में इतना साहस नहीं थी कि नाग को भगा सके। वे तो डरे हुए थे कि कहीं साँप उन्हें ही न डस ले।

इतने में लगभग दस बारह साल का केवटिया भागता आया और तेजी से पेड़ पर चढ़ने लगा। उसे देख लोग सकपका गए– ''इतनी कम आयु और इतना साहस।''

''बेटा, तोते के बच्चे को बचाने के लिए अपने प्राण क्यों खोना चाहते हो? साँप बड़ा खतरनाक होता है। अगर उसने तुम्हें काट लिया तो बच न पाओगे।'' एक व्यक्ति ने उसे अपनी ओर खींचते हुए कहा।

''काका! देखो...देखो...ऊपर देखो। दूसरे पेड़ पर बैठे तोता–तोती की आँखें कैसी गीली है। अवश्य इसके माता–पिता होंगे। ठीक मेरी माँ की तरह दुखी हैं। जरा सा मुझे बुखार होने पर वह भी तो टप–टप आँसू बहाने लगती हैं।

काका का हाथ झटक वह तो पेड़ पर वो चढ़ा...वो चढ़ा और फुर्ती से साँप के मुँह में छोटे तोतू को खींच लिया। तोता–तोती तो टें–टें कर प्रसन्नता से पंख फड़फड़ाने लगे। नीचे खड़े बच्चों ने भी तालियाँ बजाकर उनका साथ दिया। साँप इस बात के लिए तैयार न था कि उसके मुँह से उसका भोजन छीन लिया जाए। वह गुस्से से पागल हो गया। बालक को डसने के लिए अपने विष भरा फन लहरा दिया। पर केवटिया भी कम चुस्त न था। तोतू को लेकर उससे पहले ही वह पेड़ से नीचे लंबी कुदान लगा बैठा। उसके घुटने छिल गए, स्थान–स्थान पर रक्त रिसने लगा पर तोतू को सुरक्षित देख विजयी मुस्कान उसके मुख पर छा गई।

● बैंगलुरु (कर्नाटक)

आओ पता करें।

बच्चों ! आपने यह अंक ध्यान से पढ़ा है तो बताओ निम्नांकित शब्द अंक की किस रचना में आए हैं।

सागर की रेत, बच्चों का झबरू, मिट्टी के बर्तन, कथा व्यास, बड़ा निराला, सूरज की किरणें, खेतीबाड़ी, जलनिधि, ठिठककर, आँखों में चमक

।। बाल प्रस्तुति ।।

आदर्श आरंभ

कहानी : नीतिष कुमार

वेदपुर गाँव पहुँचकर निलय का मन उत्साह से भर उठा था। उसने पहली बार किसी गाँव को देखा था।

उसके पिताजी शहर में रेशमकीट विभाग में कार्य करते थे। इस बार उनका स्थानांतरण वेदपुर गाँव में हुआ था। गाँव के विद्यालय में ही उन्होंने निलय का प्रवेश करा दिया था।

वेदपुर गाँव छोटी-छोटी पहाड़ियों के मध्य में स्थित एक छोटा सा गाँव था। शहर से इसकी दूरी ४०-४५ किलोमीटर थी। गाँव के लोग मिलनसार स्वभाव के थे, इसलिए निलय और माता-पिता का मन कुछ दिनों के बाद यहाँ पर लगने लगा।

वे लोग हमेशा से ही शहर में रहे थे। गाँव का परिवेश शहर से बिलकुल भिन्न था। यहाँ पर लोग सुबह जल्दी उठ जाते थे और अपने नित्य के कामों में लग जाते थे। सभी के घरों में गाय बकरियाँ मिल जाती थी। गाँव के लोगों की जीविका का मुख्य स्रोत पशुपालन और खेती-बाड़ी ही था। निलय को यहाँ पर शुद्ध दूध और हरी साग-सब्जियां आसानी से मिल जाया करती थीं।

निलय पढ़ने में मेधावी था और अपने पुराने विद्यालय में खेल-कूद में भी हमेशा आगे रहता था, इसलिए गाँव के विद्यालय में उसकी बहुत से लड़कों से खूब दोस्ती हो गई।

उसके पिताजी दिन में कार्यालय में रहते, लेकिन वे सुबह गाँव के बच्चों को और शाम में गाँव के ही अनपढ़ लोग को पढ़ाया करते थे। वे सोचते थे कि इस छोटे से गाँव में अगर थोड़ा सा परिश्रम करें तो गाँव को शीघ्र ही शत-प्रतिशत साक्षर किया जा सकता है। वे कार्यालय में खाली समय में बैठकर गाँव के विकास के लिए योजनाएं बनाया करते थे।

शाम के समय निलय अपने दोस्तों के साथ गाँव के मैदान पर खेला करता और गाँव भी घूमा करता था। एक बार ऐसे ही गाँव में घूमते हुए उसने देखा कि गाँव की सीमा से सटे हुए भाग में एक बहुत बड़ा सूखा तालाब था। गर्मी शुरु होने से पहले ही इतने बड़े तालाब को सूखा देखकर निलय आश्चर्यचकित हो गया। तालाब के आसपास भी बहुत सी खाली बंजर जमीन पड़ी हुई थी। उसने अपने

दोस्तों से इसके बारे में पूछा। दोस्तों ने तब कहा कि यह तालाब सिर्फ बरसात के दिनों में ही भरता है।

निलय ने तब अपने दोस्तों से कहा कि इस तालाब की खुदाई बहुत कम है, अगर इस तालाब में गहराई से खुदाई हो तब वर्षा के मौसम में इसमें पानी का संचय बहुत अधिक होगा और पानी भी साल भर तालाब में रहेगा।

निलय ने तब मन ही मन में सोचा कि अगर तालाब के पास खाली पड़े जगहों पर एक बड़े उद्यान का निर्माण हो जाए और तालाब का सौंदर्यीकरण भी कर दिया जाए तो यह गाँव आसपास के सभी गाँवों का आकर्षण का केन्द्र बन जाएगा।

रात में उसने अपने मन की बात पिताजी को बताई। बेटे के द्वारा गाँव की भलाई के बारे में सोचना और उसके लिए योजना बनाना, यह जानकर पिताजी बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा कि वे इस बारे में कल गाँव के मुखिया से बात करेंगे।

सुबह उठकर पिताजी गाँव के मुखिया के पास गए और इस बारे में विस्तार से उन्हें समझाया। गाँव के लोगों के सामूहिक सहयोग से उद्यान का निर्माण और तालाब का सौंदर्यीकरण होने के बारे में जानकर वे बड़े उत्साहित हुए और कहा कि अब वे इस योजना का शीघ्र से शीघ्र शुभारंभ करना चाहते हैं।

इसके बाद मुखिया और पिताजी ने गांव के प्रबुद्धजनों के साथ मिलकर एक समिति का गठन किया। इस समिति में पिताजी, मुखिया और गाँव के हरेक वर्ग से प्रबुद्ध लोगों को शामिल किया गया। इस समिति का उद्देश्य उद्यान का निर्माण, तालाब का सौंदर्यीकरण के अलावा गाँव के विकास के लिए योजनाएं बनाना और गाँव के ही लोगों के सुझाव से उन योजनाओं को फलीभूत करना था।

धीरे–धीरे लोगों के सहयोग से उद्यान का निर्माण और तालाब का सौंदर्यीकरण काम शुरु हो गया। गाँव के ही नवयुवकों ने इसमें अपना श्रमदान दिया।

इन योजनाओं के शुरु होने से गाँव वाले बहुत प्रसन्न थे और सभी निलय और उसके मित्रों को धन्यवाद दे रहे थे।

कुछ लोगों ने अब गांव की नालियों और गलियों को फिर से सुनियोजित ढंग से बनाने का सुझाव समिति को दिया। गाँव के लोगों के सुझावों और सहयोग से यह कार्य भी अब प्रारम्भ हो गया।

निलय के सुझाव से गाँव में विकास की एक छोटी–सी योजना का शुभारंभ हो गया था। गाँव भी अब धीरे–धीरे पूर्ण साक्षरता की ओर बढ़ रहा था। पिताजी ने अब पशुपालन, सामूहिक खेती–बाड़ी करना और अन्य विभिन्न योजनाएं गाँव के विकास के लिए बनाई और समिति के लोगों के साथ इसे साझा किया । सभी लोगों को वे योजनाएं पसंद आई और सभी ने उन योजनाओं का भी गाँव में शुभारंभ किया।

सामूहिक एकता और आपसी सहयोग से ये सभी योजनाएं सफलतापूर्वक गाँव में शुरु हो गई थीं। अच्छे कामों के कारण गाँव अब पूरे जिले में आकर्षण का केन्द्र भी बन गया और सरकारी सहायता भी गाँव को खूब मिलने लगी। वेदपुर जैसे छोटे गांव में अब नगरों जैसी सुविधाएं मिलने लगी थी।

देखते ही देखते वेदपुर गाँव जिले का एक आदर्श गाँव बन गया और दूसरे गाँवों के लिए भी यह उदाहरण बन गया।

● **मल्हारा (झारखण्ड)**

सही उत्तर

उलझ गए – मोहन और राजू आपस में भाई हैं।

चित्र विचित्र – ०, १, २, ४, ५, ६, ७, ८, ९

संस्कृति प्रश्नमाला – सुषेण, कृपाचार्य, हिन्दुओं के द्वीप, मानसरोवर, विश्वामित्र, अफजल खान, महाभारत (शांति पर्व), वीर नारायण सिंह, सलूम्बर, जियाउद्दीन

बताओ तो जाने–

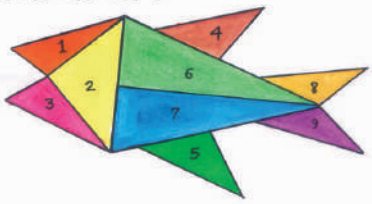

पुस्तक परिचय

हिन्दी बाल साहित्य जगत की सुख्यात रचनाकार, समीक्षक और संपादक **डॉ. शकुन्तला कालरा** द्वारा प्रस्तुत एवं बाल साहित्य शोधार्थियों तथा अध्येताओं के लिए **नमन प्रकाशन ४२३१/१, अंसारी रोड़ दरियागंज, नई दिल्ली** द्वारा प्रकाशित दो बहुमूल्य ग्रंथ।

हिन्दी बाल साहित्य विचार और चिंतन- यह ग्रंथ बाल साहित्य की विविध प्रवृत्तियों, विकास क्रम एवं विभिन्न पक्षों पर समुचित विचार–विमर्श एवं शोधपूर्ण सामग्री से भरपूर है।

मूल्य ५५०/- पृष्ठ २६४

हिन्दी बाल साहित्य विधा विवेचन- डॉ. शकुन्तला कालरा द्वारा सुसंपादित इस ग्रंथ में बाल साहित्य के विख्यात विचारकों द्वारा हिन्दी बाल साहित्य की विविध विधाओं की विवेचना प्रस्तुत की गई है।

मूल्य ९५०/- पृष्ठ ६६९

बाल साहित्य जगत की शीर्षस्थ लेखिकाओं में एक **डॉ. बानो सरताज** द्वारा प्रस्तुत **के. के. पब्लिकेशन्स ४८०६/२४, भरतराम रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली** द्वारा प्रकाशित एक महत्वपूर्ण शोध ग्रंथ।

बाल साहित्य के सोपान- बाल साहित्य को जानने समझने और उसका विशलेषण एवं मूल्यांकन करने में उपादेय इस ग्रंथ में बाल साहित्य पर बहुआयामी उत्कृष्ठ विमर्श प्रस्तुत हुआ है।

मूल्य ७९५/- पृष्ठ २८६

राकेश चक्र की चुनिंदा बाल कहनियां- श्री हिन्दी बाल साहित्य संसार के वरेण्य रचनाकारों में प्रतिष्ठित डॉ. राकेश चक्र की ८५ बहुतविध बाल कहानियों का समृद्ध कोश है यह पुस्तक। पुस्तक श्री चक्र के बहुरंगी कथा संसार का परिचय कराती है।

प्रकाशन – लवकुश सिंह सेहबरपुर रतनपुरा, जिला मऊ २२१७०६ (उ.प्र.)

मूल्य ९५०/- पृष्ठ ४१६

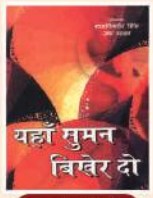

यहाँ सुमन बिखेर दो – हिन्दी बाल साहित्य के आकाश में चन्द्रवत् प्रकाशित होने वाले मूर्द्धन्य बाल साहित्य सर्जक **स्व. श्री चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक'** की बाल साहित्य साधना पर **डॉ. राजकिशोर सिंह** एवं **डॉ. उषा यादव** के अनथक प्रयत्नों से संचित एवं संपादित प्रचुर सामग्री से परिपूर्ण इस ग्रंथ का प्रकाशन **आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली ११०००६** द्वारा किया गया है। ग्रंथ को मयंक जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अनेक स्वनामधन्य बाल साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से उन्हें स्मरणांजलि दी है।

मूल्य ३७५/- पृष्ठ ३६०

बाल सपने और हम- डॉ. राकेश चक्र के लिए बच्चों, अभिभावकों व शिक्षकों के लिए अत्यंत उपयोगी निबंध और जीवनियों का संकलन।

प्रकाशन – आविष्कार प्रकाशन एल २०/१३, द्वितीय तल गली नं. ५ शिवाजी मार्ग, करतार नगर, दिल्ली

मूल्य ४००/- पृष्ठ १६०

डाक्टर का बिल

चित्रकथा : देवांशु वत्स

कौए का भोज

कविता : शुभदा पांडेय

दादी माँ ने मूढ़ी फेंका
कौए ने तिरछे हो देखा
दादी माँ ने चूड़ा छींटा
इक-दूजे कौए ने झींटा
दादी माँ जब रोटी लाई
कौए के मन को भी भाई
भात कटोरा भर जब रखा
कौआ बोला बहुत है अच्छा
बड़ा और नमकीन खिलाई

कौआ ता-थई नाचा भाई
जन्मदिवस पर पुआ- पकौड़ा
महाभोज से नाता जोड़ा
दूध, दही, पकवान जो पाता
वर्णन करते नहीं अघाता
दाना देकर दादी रूकती
कैसे खाया सब थी कहती
दादी की थी बात समझते
जाओ अब, तो फुर्र से उड़ते

• शिलचर (असम)

चालाक बच्चा

कविता : उमाशंकर 'मनमौजी'

एक किराये का मकान था,
किन्तु सिर्फ देना था उसको।
ऐसे किरायेदार चाहिए,
कोई बाल न बच्चा जिसको।।
लेने उस खाली मकान को,
लोग कई रोजाना आते।
घर-मालिक की शर्त सुनकर,
लौट बेचारे वापस जाते।।

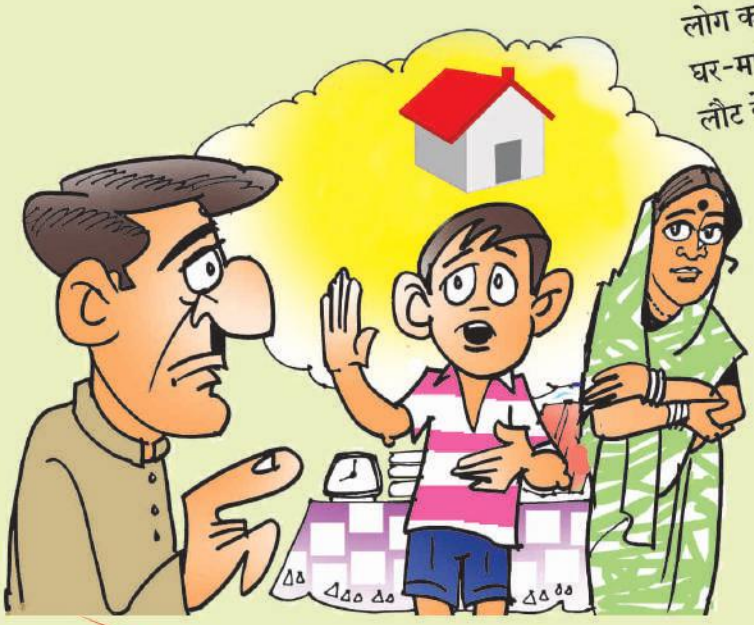

तभी किराये पर लेने को,
एक दिन एक बच्चा आया।
मुझे किराये पर दे दीजै,
घर मालिक से यह फरमाया।।
मै हूं आपके मन-मुताबिक,
जैसा कि चाहते आप हैं।
मेरा कोई बाल न बच्चा,
यह मेरे माँ और बाप हैं।।
घर-मालिक दे दिया इसी को,
इंकार कर दिया बाकी को।
कहँ 'मनमौजी' सबक सीख लो,
इस बच्चे की चालाकी को।

• भोपाल (म.प्र.)

छः अंगुल मुस्कान

- विष्णुप्रसाद चौहान
- नमन श्रीवास्तव

पहला - क्या कर रहे हो ?
दूसरा - मूंगफली खा रहा हूँ।
पहला - अकेले-अकेले।
दूसरा - अब ५ रु. की मूंगफली में भंडारा करूं क्या?

*****

दुःख क्या होता है...
ये उस मनुष्य से पूछो जिसे भंडारे में पूड़ी भी न मिले... और चप्पल भी चोरी हो जाए।

पिता (पुत्र से) - भूगोल में तुम्हें जीरो मिला?
पुत्र - ऐसी बात नहीं है पिताजी! शिक्षक के पास स्टार समाप्त हो गए थे तो मुझे प्लेनेट दे दिया।

शिक्षक (छात्र से)- मीटर और लीटर में क्या अंतर है?
छात्र - सर, मीटर सूखा होता है, लीटर गीला।

पता नहीं लोग सच्चे मित्र कैसे ढूंढ लेते हैं?
यहाँ पिछले आधे घंटे से सेलो टेप का किनारा ढूंढ रहा हूँ, मिल ही नहीं रहा।

*****

ये तो अच्छा है कि बोर्ड परीक्षा का 'एक्जिट पोल' नही आता, नहीं तो घर वाले ३-४ दिन पहले से ही पिटाई शुरु कर देते...।

*****

*****

पहला छात्र (कक्षा के दूसरे छात्र से)- अब हल्ला करना बंद कर, और सुन, मैं मॉनिटर हूँ।
दूसरा छात्र - तू मॉनिटर है, तो मैं सी पी यू हूँ, समझे।

*****

अमन मुझे अपने लैपटाप कैपीसिटी बढ़ानी है क्या करूँ?
नमन - बहुत सरल है, इसमें विंडोज की जगह दरवाजे लगवा लो।

*****

मरीज - डॉक्टर साहब, मुझे कुत्ते ने काट लिया है।
डॉक्टर - पर क्या तुम नहीं जानते कि हमसे मिलने का समय शाम ५ से ७ बजे का है?
मरीज - मुझे तो पता है, पर कुत्ते को नहीं पता।

देवपुत्र परिवार-पत्र मेला

बच्चो! हम सबके जीवन में अपनेपन का भाव अपने परिवार से ही प्रारंभ करते हैं। यह वाट्सएप और ई-मेल का युग है ऐसा माना जाता है लेकिन आपकी पुरानी पीढ़ी अर्थात् अनेक के दादा-दादी, नाना-नानी इस नए प्रचलन से अनभिज्ञ हैं ऐसे परिवारजनों के लिए पत्र वर्षों पुराना माध्यम होकर भी उतना ही सशक्त है।

देवपुत्र आपके लिए एक विशिष्ट आयोजन कर रहा है वह है 'देवपुत्र परिवार-पत्र मेला'। इसमें सम्मिलित होने के लिए आपको पाँच पत्र लिखना होंगे।

एक- अपने दादा-दादी को

दो- अपनी माँ को

तीन - अपने आचार्य, दीदी/शिक्षक को

चार- किसी ऐसे व्यक्ति को जो आपके परिवार का सदस्य तो नहीं पर आपके परिवार से उसका संबंध इतना है कि उसे आप पारिवारिक रिश्तों का नाम देकर पुकारते हैं जैसे रिक्शे वाले भैया, फूल वाली अम्मा, सफाई वाली काकी, किराने वाले काका आदि।

पाँच - पाँचवा पत्र लिखिए अपनी भारत माता यानी देश के नाम, इस पत्र में आप देश के लिए क्या करना चाहते हैं अपना वह संकल्प और उसे पूरा करने की आपकी योजना का उल्लेख करें।

पत्र लिखते समय हम चाहते हैं कि आप अंकल/आंटी, सर/मेडम आदि के स्थान पर भारतीय सम्बोधन का उपयोग करें।

पत्र में आप अपने स्वाभाविक विचार लिखें न कि उसे सुने सुनाए, रटे रटाए आदर्श से ठसाठस भर दें। हाँ सहज रूप से आप किसी आदर्श या प्रेरणा से प्रभावित हैं तो उसका उल्लेख किया जाना चाहिए।

- पत्र सुवाच्य अक्षरों में हिन्दी भाषा में लिखा हों।
- यह पत्र लगभग ३०० से ५०० शब्दों में हो।
- प्रतियोगिता केवल अष्टमी से द्वादशी तक अध्ययनरत बच्चों के लिए है। अतः अपनी कक्षा का प्रमाण पत्र अपने प्राचार्य/प्रधानाचार्य से प्रमाणित कर अवश्य भेजिए।
- पत्र हमें ३१ दिसम्बर, २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो जाएं।
- अपनी प्रविष्टि (पाँचों पत्रों की एक प्रविष्टि मानी जाएगी)के साथ प्रविष्टि पत्र पृथक से कागज पर स्वयं लिखकर भेजें।

प्रविष्टि भेजने का पता है - संयोजक देवपुत्र, परिवार-पत्र मेला
द्वारा/देवपुत्र, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

पत्र का प्रारूप होगा-

श्रीमान संयोजक महोदय,
देवपुत्र परिवार पत्र मेला
इन्दौर

महोदय मैं.....कक्षा .....देवपुत्र द्वारा आयोजित देवपुत्र परिवार पत्र मेला में सहभागी होना चाहता हूँ/चाहती हूँ। मेरी प्रविष्टि (पांचों पत्र) सम्मिलित करें। मेरा पता है -

नाम..... पिता.....

पता.....

पिन कोड | | | | | | | दूरभाष | | | | | | | | | | |

हस्ताक्षर प्रतिभागी

प्रत्येक प्रकार के तीन-तीन सर्वश्रेष्ठ पत्र पुरस्कृत किए जाएंगे।

देवपुत्र द्वारा आयोजित पुरस्कार एवं सम्मान घोषित

देवपुत्र द्वारा विभिन्न साहित्यकारों और सहयोगियों के सहयोग से संचालित विभिन्न पुरस्कारों एवं सम्मान की घोषणा कर दी गई है। परिणाम इस प्रकार है -

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१८

वर्ष २०१८ के लिए बाल उपन्यासों में श्री अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' की कृति 'नया सवेरा' पुरस्कृत की गई। इस कृति पर उन्हें ५०००/- का पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१८

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बालों और किशोरों की भूमिका पर आधारित प्रसंगों के रूप में प्राप्त प्रविष्टियों में निम्नांकित साहित्यकार सफल रहे।

(१)	वह सच बोला – श्री गोविन्द शर्मा, संगारिया (राज.)	प्रथम	१५००/-
(२)	आहुति प्राणों की – पद्मा चौगाँवकार, गंजबासौदा (म.प्र.)	द्वितीय	१२००/-
(३)	क्रांतिजीवन – रामकरन, मिश्रोलिया (उ.प्र.)	तृतीय	१०००/-
(४)	खुदीराम बोस – डॉ. लता अग्रवाल, भोपाल (म.प्र.)	प्रोत्साहन	५००/-
(५)	क्रांतिकारी किशोर सरजू प्रताप सिंह – डॉ. सुधा गुप्ता, कटनी (म.प्र.)	प्रोत्साहन	५००/-

- यह पुरस्कार डॉ. परशुराम शुक्ल के अर्थ-सहयोग से प्रदान किया जाता है।

प्रताप सम्मान २०१८

क्रांतिकारियों पर प्रचुर लेखन करने वाले सतना के श्री छोटेलाल जी पाण्डेय द्वारा दिए गए अर्थ-सहयोग से संचालित प्रताप सम्मान २०१८ में क्रांतिकारियों पर कविता लेखन हेतु सम्मानित साहित्यकार हैं -

(१)	डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)	प्रथम	सम्मान निधि २१००/-
(२)	आचार्य नीरज शास्त्री, मथुरा (उ.प्र.)	द्वितीय	सम्मान निधि १५००/-
(३)	श्री रामगोपाल राही, लाखेरी (राज.)	तृतीय	सम्मान निधि ११००/-

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१८

देवपुत्र के व्यवस्थापक रहे स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति में उनके परिवार द्वारा प्रदत्त अर्थ-सहयोग से बच्चों के लिए आयोजित इस प्रतियोगिता के विजेता हैं –

(१)	अरुण शुक्ला, उतैली, सतना (म.प्र.)	प्रथम पुरस्कार	१५००/-
(२)	कंचन जोशी, नरतोला (उत्तराखण्ड)	द्वितीय पुरस्कार	११००/-
(३)	प्रखर पाराशर, इन्दौर (म.प्र.)	तृतीय पुरस्कार	१०००/-
(४)	आयुष पराते, उतैली, सतना (म.प्र.)	प्रोत्साहन पुरस्कार	५५०/-
(५)	योगेन्द्र साहू, नवागढ़ (छ.ग.)	प्रोत्साहन पुरस्कार	५५०/-

सभी सफल प्रतिभागियों को देवपुत्र परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०६/२०१९
प्रेषण तिथि ३०/०६/२०१९
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

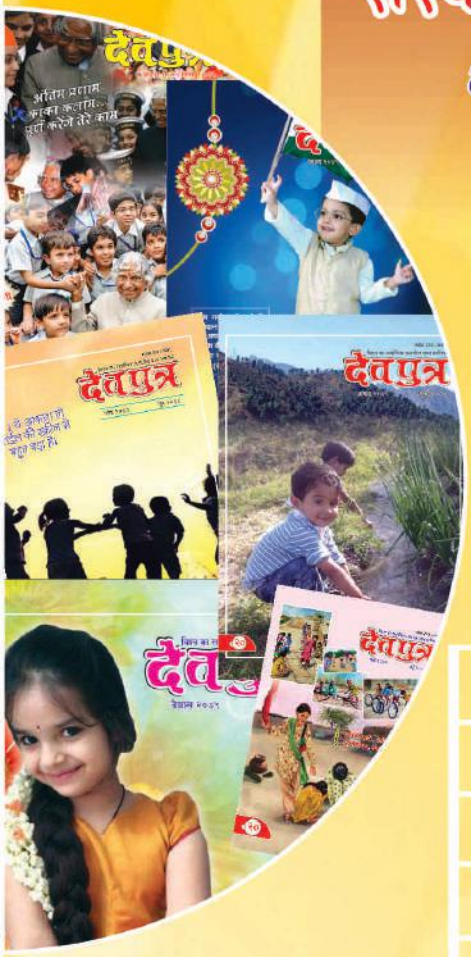

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अवश्य देखें

www.devputra.com

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. (प्रति सदस्य)

- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।
- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना